श्री जयकिशन दास जैन

श्री मति इलायची देवी जैन
(धर्म पत्नी) श्री जयकिशन दास जैन

स्तक मिलने का पता:—
श्री श्रीपाल जैन,
६९२ गली उमराव,
पहाड़ी धीरज,
देहली-६

लेखक का परिचय

इस भजनावली के रचयिता श्री जयकिशन दासजैन का जन्म जिला मेरठ के कौताना ग्राम में संवत १९६२ सावन कृष्ण द्वितीया को हुआ। आपके पिता का नाम कश्मीरी लाल तथा माता का नाम मिसरी देवी है। सवत् १९७१ में आप सोनीपत निवासी लाः चिम्मन लाल के दत्तक पुत्र हुए। सवत् १९७७ में रोहतक निवासी श्री मुन्शी राम की पुत्री इलायची देवी से विवाह हुआ। आपके पाँच पुत्र एव छः पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। आप आजकल दिल्ली शहर पहाडी धीरज के निवासी है। और दिल्ली क्लाथ मिल मे क्लाक सुपरवाईजर है।

दो शब्द

प्यारे सज्जनो ना मै कवि हूं ना लेखक। मैं तो साधर्मी सज्जन पुरुषों का मूढ़ सेवक हूं। ना मैने पिगंल पढ़ा ना व्याकरण। छोटी उम्र से मुझे शास्त्र पढ़ने-सुनने का शौक था इसलिये भक्ति-वश होकर मैने अपने हृदय की आवाज यूं ही टूटी-फूटी जबान मे जोड़ कला करके लिख दी है। सज्जन जन इसकी त्रुटियों पर ध्यान न देकर मेरे दिल की आवाज को समझना।

सज्जनों मैने "बुद्धसैन-मनोवती" नाटक भी दर्शन कथा के आधार पर लिखा है। यदि आपने मेरा उत्साह बढ़ाया और कर्म ने साथ दिया तो वह भी जल्दी छपेगा। मैंने चार हिस्से ज्यौतिष के अनमोल मोती और चार हिस्से बहुत सी दवाई बनाने और दस्तकारी से पैसा पैदा करने के अपने अंजमाये हुए लिखे है।

हमारे पास एक ऐमी पुस्तक है जिसके द्वारा आप प्रश्न करिये। हम आपका सोचा हुआ प्रश्न व उसका उत्तर भी बतलायेंगे। हमे जहाँ तक अनुभव हुआ है उत्तर सही मिलता है।

मैं पण्डित निरंजन दास का अभारी हूं। जिन्होने मुझे बड़े प्रेम से छोटी सी अवस्था से शास्त्रों का अध्यन कराया। आज जो कुछ मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। उन्ही की कृपा का फल है।

मैं पण्डित हीरालाल जी कौशल का भी हृदय से आभारी हूं। पण्डित जी का जैसा नाम है वैसे ही हीरा हैं।

अन्त में मैं प्रकाशक महोदय व उन सब मित्र गणों का भी हृदय से धन्यवाद करता हूं जिनके सहयोग से यह भजनावली आपके सम्मुख प्रस्तुत हो सकी है।

इस भजनावली मे जितने दोष है वे मेरे अपने और गुण गुरुजनों की कृपा का प्रसाद है।

विनीतः—

जयकिशन दास जैन

४६७० गली मोहर सिंह जाट,

पहाड़ी धीरज,

देहली-६

सेवक प्रिन्टिंग प्रेस अहाता किदारा देहली-६

चाल :- (बहरे तवील)

प्रभु कर आया आशा चरण आपके
पूछु जो कुछ बतावो दया धारके,
स्वाँग मैंने दिखाये तुम्हे बहुत से,
लाख चौरासी के रग अजब धारके ॥ १ ॥

खेल मेरा लगा तुमको प्यारा अगर
पारितोषिक दो फिर तो जी दाता हो तुम,
पार कर दो मेरी किश्ती ससार से,
ये पुरस्कार दीजे दया धारके ॥ २ ॥

खेल खोटा मेरा गर लगा आपको,
स्वाँग भरना दो फिर तो छुडा ये मेरा,
खोटी आदत छुडाता पिता पुत्र की,
तुम पिता हो छुडावो दया धारके ॥ ३ ॥

दास जयकृष्ण की है यही प्रार्थना
कर्म बन्धन से मुक्ति दिलादो प्रभु
लाख चौरासी मे से निकालो मुझे
दीजे दर्शन जिनेश्वर दया धारके ॥ ४ ॥

२.

चाल :- (बहरे तवील)

कब ऐसा समय होगा दीजे बता,
तुम पूजन को नही आऊँ प्रभू.

पूजा तुमको बहुत मैने परमात्मा
कब अपनी मैं पूजा रचाऊँ प्रभू ॥ १ ॥
लीनी मैने शरण बहुत दिन आपकी
कब अपनी मै शरण में आऊ प्रभू
कब देखूं मैं अपने मे ही आपको
और अपना ही पाठ रचाऊं प्रभू ॥ २ ॥
आपमें और मुझमे है अन्तर यही
आपने आपको देख पाया प्रभू
अष्ट कर्मों से पाई विजय आपने
इसलिए तुमको पूजन को आया प्रभू ॥ ३ ॥
मैंने आपे मे अपने को ढूंढा नही
इसलिए तुमको फिरता रहा ढूँढता
कभी कर्मों से भी जंग जोडा नही
मोह माया मै आपा फसां कर प्रभू ॥ ४ ॥
दास जयकृष्ण की है यही प्रार्थना
पाठ सोहग का करना सिखा दो प्रभू
अष्ट कर्मों से लडना सिखा दो मुझे
और विजय इनसे मेरी करादो प्रभू ॥ ५ ॥

३

चाल :- (बहरे तवील)

अष्ट कर्मों ने पकडा है जकडा मुझे
ज्ञान औषधि पिलाकर छुडा दो प्रभू

३

थक गया घूमा, चौरासी की सैर की
भोग भोगे मैं स्वय को भुलाकर प्रभू ॥१॥

पेड़ च दन के जो पास पौदा उगे
सम उसे अपने, चदन, बना ले प्रभू
लीनी तुमने न अब तक मेरी कुछ खबर
अष्ट कर्मो से वेगी छुडा दो प्रभु ॥ २ ॥

रत्न चि तामणि जिसके हाथ लगे
कोई चि ता न उसको सतावे प्रभू
क्या है चि तामणि आपके सामने
कर्म चिंता सभी से छुडा दो प्रभु ॥ ३ ॥

वैद्य के पास जाता जो रोगी कोई
रोग, दुख दर्द सब, वैद्य उसका हने
आप सम कौन जग में महा वैद्य है
रोग जामन-मरण का मिटा दो प्रभू ॥ ४ ॥

माँगे भिक्षुक सभी से करे आरजू
दाता वो है तमन्ना जो पूरी करे
आप सम दूजा दाता जिनेश्वर नहीं
बेगि जयकशन को मुक्ति दिला दो प्रभु ॥ ५ ॥

४

चाल :- (बहरे तवील)

गर कही मानो ऐसा बताऊं यतन
सर्व ऐश्वर्य सुख-शान्ति पाते रहो

न सतावो किसी को कभी भूलकर
कर दया सबको अपना बनाते रहो ॥ १ ॥
शत्रु जो हो न उनसे रखो शत्रुता
मित्र कर ज्यादा, शत्रु घटाते रहो
भूल कडवा वचन बोलो हरगिज नही
मीठी वाणी से प्रेमी बढाते रहो ॥ २ ॥
चोरी जारी से घृणा सदा कीजिए
करिए हर्गिज नशा न कभी भूल कर
मत खेलो जुआ, मान सब छोड दो
खोटी सगत से तन मन बचाते रहो ॥ ३ ॥
कीजे परमार्थ निज स्वार्थ को छोडकर
देश सेवा मे तन-मन लगाते रहो
पर नारी को नागन समझ लीजिए
खोटी वाणी से जिव्हा बचाते रहो ॥ ४ ॥
सप्त खोटे व्यसन जो जिनेश्वर कहे
उनसे तन मन को अपने बचाते रहो
बोल कम बोलो, बोलो जो सच बोलिए
वृथा खर्ची से पैसा बचाते रहो ॥ ५ ॥
कर के मेहनत कमाई करो धर्म की
छोड आलस अनीति से बचते रहो
छल कपट बेईमानी से बचकर सदा
प्रभु भक्ति मे जीवन लगाते रहो ॥ ६ ॥

भज जयकशन जिनेश्बर को चित्त एक करे
धर्म सत्संग मे प्रेम बढाते रहो
कभी सोचो न मन में किसी का बुरा
अपना जीवन सुखी यों बनाते रहो ॥ ७ ॥

५

चाल — क्या रे तुझ को हवा क्या रे तुझ को हुआ
मत खेले जुआ मत खेले जुआ
क्यो तू अपना ही आप रे दुशमन हुआ (टेक)
हार जब तेरी हुई प्यारी का जेवर उतारा
पास जब कुछ न रहा कपडों को गिरवी डारा
बर्तन भाँडे भी सभी जा के जुए मे हारा
लेने को ऋण भी चला कौन करे पतियारा
बैठे जाकर जहाँ, धक्के मिलते वहाँ, झिड़के दे सब जहाँ
तू कर्जदार दुष्टो का हाय हुआ ॥ १ ॥
देने को जब न हुवा छुपता फिरे खानों से
किसी का बाल पकड़, बाली काढि कानो से
किसी की जेब कतर, डाके जनी भी कीनी
पकड के मौत या लम्बी सजा राजा दीनी
सारी इज्जत गई, मिले रोजी नही,
सारी दुनिया की आंखो मे नीचा हुआ ॥ २ ॥
जीत ने तेरी तुझे और व्यसन मे डारा

होवे दावत औ, कहे यार हो महफिल भारा
मगा के दारू का अद्धा रे चढाया सारा
मांस की हंडिया पकी जीत का है ढग न्यारा
मस्त ऐसा हुआ, बहन, बेटी बुआ,
पर नारी पर पागल दिवाना हुआ ॥ ३ ॥
पास गणिका के गया ऋतुमति गणिका पाई
तन में बहु रोग हुवे गणिका ने पुत्री जाई
पुत्री जब गणिका बनी लाखो बने हैं जमाई
मर के नर्कों मे पडे बुद्धि तेरी भरमाई
प्यारे जुए की वान है सब औगुण की खान
ये जिनेश्वर ने जयकशन वताया हुआ ॥ ४ ॥

६

चाल.-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
कर्म की रेख को ज्ञानी ज्ञान से मेट देते है
लगा कर ध्यान आतम का कर्म को काट देते है ॥ १ ॥
गलत मसला है जो कहता कर्म टाला नही टलता
जो हो सतोषी और ज्ञानी पलट कर्मो को देते है ॥ २ ॥
उदय गर कर्म हो खोटे न घबराते जरा दिल मे
शील सयम औ तप से कर्म को वो मेट देते है ॥ ३ ॥
अशुभ कर्मो से शुभ फल रस को ले पुरूषार्थ से ज्ञानी
कि जैसे माली पेव द से पलट फल रस को देते है ॥ ४ ॥

पड़े रहते है गलती से कर्म की जो लकीरों पर
उन्हे शुभ कर्म भी खोठा अशुभ फल तीव्र देते हैं ।। ५।।
जिनेश्वर भज सदा जयकशन लगा कर ध्यान आत्मका
ध्यान ध्याकर के ज्ञानी कर्म सारे काट देते हैं ।। ६ ।।

७

चाल:- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
नौ निधी चौदह रत्न और महल थे रत्नोमयी
देवता करते थे सेवा अब निशा उनका नही ।। १ ।।
थे बडे जो रूप वाले कामदेव जो हो गये
था न शानी जिनके कोई अबनिशा उनका नही ।। २ ।।
कुल बडा कितना हुआ यादव का वो भी मिट गये
वैद्य भी लुकमान से अब है निशा उनका नही ।। ३ ।।
द्रोण अर्जुन को निशाने पर बड़ा अभिमान था
देख निशाना भील का गांडीव रहा कुछ भी नही ।। ४ ।।
कुल रूप धन वल पर बडा रावण को अपने मान था
राम लक्षमण जा गिराया क्या रहा, कुछ भी नहीं ।।५।।
हनुमान हिरणाकुश, कर्ण और भीम वाली से गये
जरासिंध से भी चल बसे और कृष्ण से भी रहे नहीं ।। ६ ।।
मान मानी का कभी जयकशन सदा रहता नही
भज ले जिनेश्वर नाम को और साथ जा कुछ भी नही ।।७।।

८

चाल:- अल्वेली सुन्दर कर्म की गति है अपार

विषय भोगों को तज, मन को जो कोई वश मे लाते है

वो ही शुद्ध आत्मा हो पूज्य मर सुरपुर को जाते है ॥ १ ॥

फिरे निर्भय कभी कोई नही रोके कही उनको

वो रणवासों में भी जाते कही नही टोके जाते हैं ॥ २ ॥

जो मन के प्राणी है चंचल विषय भोगों मे रमते है

यहाँ होते हैं बेइज्जत वो मर नर्कों को जाते हैं ॥ ३ ॥

हुई थी क्या गति रावण व कीचक की जरा देखो

मरे बे मौत नर्कों मे पडे आँसू बहाते हैं ॥ ४ ॥

जो वन के राजा, हाथी महाबली हो क्या दशा उनकी

विषय के कारणो खडडे मे गिर बधन मे आते है ॥ ५ ॥

विषय भोगी को पानो बेठना पडता जगह कैसी

जहाँ से मूत्र-मल और वायु गन्दी गन्द आते है ॥ ६ ॥

विषय भोगों मे रमने से तो विष विषधर ही अच्छे है

मरे एक बार ही इनसे, ये भव-भव मे सताते हैं ॥ ७ ॥

विजय सेवन के पीछे काया मिट्टी की बने ढेरी

जिनेश्वर नाम जप जयकशन विषयी को रोग सताते है ॥ ८ ॥

१०

चाल.- (बहरे तवील)

नौकरी गर तुम्हें करनी है दोस्तों

जो कहा है बड़ो ने निभाते रहो

जो कहे काम मालिक खुशी से करो

खैर ख्वाही हमेशा मनाते रहो ॥ १ ॥

एक हुक्म होवे गर तो करो काम नौ
दसवीं 'हाँ जी' हमेशा बजाते रहो
जान देकर भी मालिक का कर दो भला
हाजरी पूरी हरदम बजाते रहो ॥ २ ॥
कभी मालिक का सोचो न मन में बुरा
सारी आफत से उसको बचाते रहो
खैर मालिक की हरदम मनाते रहो
सदा जयकशन जिनेश्वर को ध्याते रहो ॥ ३ ॥

११

चाल:- मुझसे क्या पूछो हो यह क्या हो गया
कर्म अब तू दूर मुझसे भाग जा
भाग जा तू दुष्ट जालिम भाग जा ॥ १ ॥
काल अनादि से फिरे चिपटा मेरे
फूंक दूं अब तप अग्नि से भाग जा ॥ २ ॥
मुझको पता अब तक नही था क्या मैं हूं
जिनराज ने बतला दिया तू भाग जा ॥ ३ ॥
नर्क ले जाकर दिये दुःख तू मुझे
छेदा भेदा काटा जालिम भाग जा ॥४ ॥
योनि तिर्यंच मे था तड़फाया मुझे
शर्दी-गर्मी को सहा अब भाग जा ॥ ५ ॥
तू दिया कभी एक इन्द्री तन मुझे
फड़वाया फुकवाया था जालिम भाग जा ॥ ६ ॥

पहाड़, पत्थर, पृथ्वी, जल मुझको किया
वायु, अग्नि था बनाया भाग जा ॥ ७ ॥
अब तो जयकशन को जिनेश्वर बाणी से
रत्न सम्यग मिल गया तू भाग जा ॥ ८ ॥

१२

चालः- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
श्री भक्तामर का वर्णन करू क्या कर नही सकता
लिखू तारीफ क्या इसकी करू क्या लिख नही सकता ॥ १ ॥
ये फलदाता है मनवाछित सभी ईच्छा करे पूरी
बताऊं किस जबाँ से गुण बताया जा नहीं सकता ॥ २ ॥
अगर धन सपत्ति चाहो या चाहो और सुख पाना
निरोगी काया हो निर्भय कोई डर हो नही सकता ॥ ३ ॥
लेवो एकात चित्त करके जपो जो मत्र जी चाहे
अरे भाई वो क्या वस्तु है जो तू पा नही सकता ॥ ४ ॥
नमो जयकशन जिनेशवर को मगन आतम हो ब्रहमचारी
सभी सिद्ध कार्य होवे कोई भी रूक नही सकता ॥ ५ ॥

१३

चाल-(कव्वाली) सखी सावन बाहर आई झुलाये जिसका जी चाहे
अरे चेतन तू उठ जल्दी समय ये बीता जाता है
समय बीता हुआ प्यारे नहीं फिर हाथ आता है ॥ १ ॥
मिला कैसा समय अच्छा मनुष्य पर्याय ये पाई

इसे खो करके विषयों मे, क्यो उल्टी राह जाता है ॥ ४ ॥
लगा चित्त पूजा भगवत मे, सुनो वाणी जिनेश्वर की
तू क्यों खोटे कर्म करके समय अपना गंवाता है ॥ ३ ॥
उटो नित भोर ऐ चेतन करो नित पाठ आत्म का
जपो नित मन्त्र नवकारा ये सुख सम्पत्त का दाता है ॥ ४ ॥
रटो नित भावना बारह लगा कर ध्यान जिनेश्वर का
यही वह मार्ग है जयकगन जो सीधा मोक्ष जाता है ॥ ५ ॥

१४

चाल -(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
जो दुनिया मे फंसे मूरख नही वो चैन पाते है
निकल जा इससे जो वचकर वही आराम पाते है ॥ १ ॥
फिरे भ्रमते अनादि काल से संसार में रूलते
जन्म जरा मरण की तकलीफ लाखो ही उठाते है ॥ २ ॥
कभी जावे नर्क में तडफा तडफा नारकी मारे
तन छेदे भेदे और काटे गला शीशा पिलाते हैं ॥ ३ ॥
न मरता आयु से पहले बहु चाहे नारकी मरना
सतावे भूख उसी का काट तन उसको खिलाते है ॥ ४ ॥
यदि निकला तडफ करके पशु पर्याय फिर पाई
फोड कर नाक डाले नाथ फिर बधिया कराते है ॥ ५ ॥
धरे फिर बोझ अधिक उसके गले पर जोड गाडी मे
भगावे, जो न भागे मार साटे की लगाते हैं ॥ ६ ॥

यदि सुरगत में भी पहूंचा तो वहाँ भी सुख नहीं देखा
पराये देखकर धन को, वो मोत अपनी पे रोते है ॥ ७ ॥
मनुष्य योनि भी गर पाई तों इसमें भी न सुख देखा
कोई औलाद बिन झुरता कोई बिन नार रोते है ॥ ८ ॥
किसी की नार कुल्टा है नहीं कोई सुखी देखा
किसी का पुत्र दुखदाई कर्म अपने को रोते है ॥ ९ ॥
किसी को शत्रु दुःख देते कोई ढूँढता फिरे धन को
अगर सब सुख हुवे दुःख फिर ये तन में रोग होते है ॥ १० ॥
जगत को छान कर देखा कही भी सुख नही पाया
छोड, जयकशन जिनेश्वर ध्यान से ही पार होते हैं ॥ ११ ॥

१५

चाल- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जीचाहे
बोझ समरथ से ज्यादा बे जवाँ पर मत धरो भाई
बिमारी में सवारी का न उनसे काम लो भाई ॥ १ ॥
समय पर खाना पीना दो क्षुधा तुम सम लगे उनको
चलावो चाल पर उनकी न मारो सांटे रे भाई ॥ २ ॥
न खेलो खेल जीवों का यह कैसा खेल है यारो
सताने से किसी को खेल मे न खेल हो भाई ॥ ३ ॥
न मारो बे जवानों को नर्क में मार खावोगे
तुम्हारा तो है ठहरा खेल किसी की जान जा भाई ॥ ४ ॥
वो वदले बहुत लेवेंगे सतावे एक दफा जिनको
समय जब आयेगा उनका न टाले से टले भाई ॥ ५ ॥

फलोगे और फूलोगे रखोगे गर दया दिल में
जिनेश्वर ने दया जयकशन सदा सुखदायी बतलाई ॥ ६ ॥

१६

चाल:-बूटी लाने का कैसा बहाना हुवा
जिया बारह रे भावना भाया करो जिया बारह को
अपनी आत्म का ध्यान लगाया करो जिया बारह को ॥ टेक ॥
इस पृथ्वी के बीच ऊंच हो चाहे नीच जावे सबआंख मीच
रहा कोई रहे न विचार करो जिया बारह को ॥ १ ॥
हो हरी, कामदेव, चक्रवर्ती, बलदेव धनी-निर्धन या देव
रहा कोई अमर ना मरेंगे सभी जिया बारह को ॥ २ ॥
होवे बकरी या शेर बुजदिल रहे ना दिलेर बचे पल भरना फेर
काल दूतो से कोई बचे ना कभी जिया बारह को ॥ ३ ॥
जयकशन क्यों करता देर-लेगा काल जो घेर सुने तेरी ना टेर
भाई बन्धु खड़े ही लखाया करो जिया बारह को ॥ ४ ॥
लीजे आत्म को साध छोड आलस प्रमाद कर जिनेश्वर की याद
कर्म कट जायें ऐसा विचार करो जिया बारह को ॥ ५ ॥

१७

चाल:-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
अरे चेतन सभल गफलत न कर मोह जाल में फसकर
नही कोई रे तेरा है तू इसको दिल यकी ले कर ॥ १ ॥
पिता-माता, सुता-सुत, भ्रात, नारी का तो क्या कहना
ये तन भी है नही अपना जिसे पाले तू अपना कर ॥ २ ॥

न गर्भा रूप, धन, वल पे न कुल का मान कर मूरख
विनश जाँ सव हकूमत राज सुपने वत ये जाँ होकर ॥ ३ ॥
है थोडी जिन्दगी जग मे कि जैसे झलक बिजली की
पडा रहेगा यही सब कुछ न जागा साथ कुछ लेकर ॥ ४ ॥
भुजग जब काल रूपी आ डसेगा तव करेगा क्या
हुवे बहु नामी और ग्रामी सभी को ये गया खाकर ॥ ५ ॥
मनुप तन पा अमोलक खो न रे प्रमाद में जयकशन
करो कल्याण आतम का जिनेश्वर नाम को ध्याकर ॥ ६ ॥

१८

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन वहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
अनादि काल से दुनिया मे घूमा हर जगह प्यारे
नही वाणी जिनेश्वर की कही सुन पाया है प्यारे ॥ १ ॥
अगर कुछ ध्यान ध्याकर ज्ञान पाकर आपको जाने
तो परमात्म कहे तुझ मे न मुझमे भेद है प्यारे ॥ २ ॥
न कोई कर्ता और हर्ता कर्म तू आप ही करता
स्वयं फल अपनी करनी का पड़ेगा भोगना प्यारे ॥ ३ ॥
कभी सुरगत कभी नरगत कभी नर्को के दुःख पावे
घुमावे लाख चौरासी कर्म कर सोच कर प्यारे ॥ ४ ॥
करी करनी पड़े भरनी कर्म इसही को कहते है
मिले संग आत्मा के ये कि जैसे तेल तिल प्यारे ॥ ५ ॥
जुदा हो कर्म सम्यग्दर्श ज्ञान और तप के करने से
तू माने पर को निज जब तक तभी तक दुःख भरे प्यारे ॥ ६ ॥

छुटे नही काल के मुँह से जन्म धर-धर मरेगा तू
छुटे जब पर को पर और जाने अपने आप को प्यारे ॥ ७ ॥
दास जयकृष्ण बारह भावना तू चित्त लगा भा ले
जिनेश्वर ध्यान ध्याकर पार हो संसार से प्यारे ॥ ८ ॥

१६

चाल:-(कव्वाली सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
जिसे सम्यग हो एक दिन प्रभु वो हो ही जाता है
विषय भोगो से चित्त उसका अलहदा हो ही जाता है ॥ १ ॥
सुधारे ग्रहस्त मे रह कर वो देखो काज आत्म का
सभी तत्वो का सच्चा ज्ञान उसको हो ही जाता है ॥ २ ॥
हुआ उसको उजाला आत्मा में कैसा आत्म का
हो जैसा ज्ञान मे वैसा पदार्थ आ ही जाता है ॥ ३ ॥
कर सब काम दुनियाँ के मगर दिल मे ये जाने है
किये कर्मो का फल देने उदय कर्मो का आता है ॥ ४ ॥
सभी कर्मो को भोगे भोगता न भोगे भोगों को
उसे निज और पर का ज्ञान यर्थाथ हो ही जाता है ॥ ५ ॥
नया बन्धन न हो उसको पुराने खिरते रहते है
उदय हो हो कर्म खिरते धर्म ध्यान हो ही जाता है ॥ ६ ॥
निजानन्द में मग्न रहते विशुद्धानन्द हो एक दिन
जिनेश्वर हो उन्हे जयकृशन सदा मस्तक झुकाता है ॥ ७ ॥

२०

चाल:- (वहरे तबील)

औ शरावी जरा मुझको ये तो बता
तूने पी करके मदिरा मजा क्या लिया
डाल प्याले मे साकी ने दी जब तुझे
नाक दुर्गन्ध से आप ही चढा क्यो लिया ॥ १ ॥
जब होठो से तूने लगाई शराब
तेरा चीरा हलक दी कलेजे मे आग
वदवू आने लगी तेरे मु ह से गजब
क्यो गुदा वायु सम मु ह बना तैं लिया ॥ २ ॥
गर हजम न हुई तो बवन हो गई
जिसकी बदबू से भगन तलक सड गई
गर हजम हो गई तो तू मुर्दा हुआ
आप अपने को पागल बना स्वयं लिया ॥ ३ ॥
जिसके पास गया, "हठ" कहे सब परे
तेरी इज्जत व हुर्मत रे सारी गई
चक्कर खाकर सड़क में कहीं गिर पड़ा
कोतवाल ने बन्दी तुझे कर लिया ॥ ४ ॥
पास गृहणी के घर में गया जब जिया
कह बाते परे हठ के कीजे जरा
मेरा बदबू के मारे मगज सड़ गया

अच्छी आदत तुम्हारी नही ये पिया ।। ५ ।।
कहे भगिनी को जोरू और जोरू को माँ
हो के पागल नशे मे रे बकने लगा
दास जयकशन ये खोटा है कैसा नशा
द्वारका को जला खाक इसने किया ।। ६ ।।

२१

चाल-ये कैसी रेल चली कल की है वु आ धार मचा दिया
जब तक जीवन में जीवन है जब तक इस तन मे प्राण रहे
तब तक हृदय मे ध्यान मेरे बस तेरा ही भगवान रहे ।। १ ।।
धर्म की ऊची शान रहे जिनवाणी मे श्रद्धान रहे
हो ध्यान सभी को आत्म का खुद की खुद को पहचान रहे ।। २ ।।
सब देश मे, इच्छा मेरी प्रभु बस तेरा ही गुनगाण रहे
उद्धार सदा हो पतितो का और पूज्य सदा गुणवान रहे ।। ३ ।।
चले मानव मोक्ष के रस्ते पर सम जंगल और उद्यान रहे
छोड कषाय इन्द्री रस तव भक्ति जगत का पान रहे ।। ४ ।।
हो मैत्री भाव जगत मे सब सम हिन्दू मुगल पठान रहे
नही अवनति हो किसी जाती की हर देश उन्नत गुजान रहे ।। ५ ।।
सब धर्म पढे आदर्श बने जग मे न कोई दहकान रहे
जयकृष्ण जिनेश्वर पार करे गर धर्म का सबको ज्ञान रहे ।। ६ ।।

२२

चाल:- घर से यहाँ कौन खुदा के लिये लाया मुझको
मोक्ष का मार्ग प्रभु खूब बताया मुझको

मैं तो सोता था पड़ा खूब जगाया मुझको ॥ १ ॥
सातो तत्वो की न थी मुझको जरा कुछ भी खबर
भेद विज्ञान बता निश्चय कराया मुझको ॥ २ ॥
नष्ट जो खोटे व्यसन फैले हुए दुनियां मे
इनसे बचने का सही रास्ता बताया मुझको ॥ ३ ॥
था अघन वन में फिरा जयकशन जिनेश्वर भटका
भूले भटके को सही मार्ग बताया मुझको ॥ ४ ॥

२३

चाल:- (सोहनी) प्रभु खूब बतलाया हमें तेरा ज्ञान अपरम्पार है
कब ऐसा होगा समय प्रभु मुझमे जी मेरा ध्यान हो
चारों कषाय कब छुटे मुझको जी मेरा ज्ञान हो ॥ १ ॥
होगा क्षायक सम्यग कब मुझे कब तोडू कर्म के जाल को
कब होगी मेरी ये भावना धन धूल सब ही समान हो ॥ २ ॥
कब रहूं वनों मे मैं मगन होकर इकल विहारी मुनी
रहे राग किसी से न द्वेष कुछ सब शत्रु समान हों ॥ ३ ॥
गर मार मुझको दे कोई या गालियाँ देवे कोई
रक्षा करे मेरी गर कोई सब मुझको एक समान हो ॥ ४ ॥
कब ध्यान मैं ऐसा धरूँ अभय तन से पशु रगड़ें कमर
मुझको न काया का हो पता मेरा ध्यान आत्म ध्यान हो ॥ ५ ॥
गर साँप और बिच्छू करे बिल तन मे मुझको न हो पता
कब आत्मा अपनी लखूं कब मुझको केवल ज्ञान हो ॥ ६ ॥

जयकशन गारे विनती जिनेश्वर ये तो बतला दीजिये
कब अष्ट कर्मों से हो विजय मुक्ति मे आतमराम हो ॥ ७ ॥

२४

राग- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिनका जी चाहे

जगत मे साधु बहु देखे नही साधु मिला हमको
करे जो साधना सच्ची जो साधे अपनी आत्म को ॥ १ ॥
कोई रखते है डंडा अंग मे चंदन लगाते है
पहन कर कपड़े भगवा वो कहे बाबा कहो हमको ॥ २ ॥
लगा लेते कोई गोया जला कर राख को उसकी
बढ़ा कर केश को कोई कहे साधु कहो हमको ॥ ३ ॥
कोई फाडे है कानो को कोई लटके दरख्तो से
वो माँगे भीख घर-घर की न दे तो शाप दे हमको ॥ ४ ॥
चढा कोई मदिरा का प्याला लगा कोई योग का आसन
करे कोई गणिका का सेवन छले कोई गैर कामन को ॥ ५ ॥
कोई कहता मैं हूं सिद्ध भेद सब जानूँ रसायन को
बतादू अंक सट्टे का जो दो सुलफा चरस हमको ॥ ६ ॥
बने कोई वैद्य जादूगर करे कोई झाडे झपटे को
कोई घर छोड वन रहते बना मठ जौड कर धन को ॥ ७ ॥
करे खेती रखे घोडे लिये हाथी सवारी को
बने है ऑनरेरी हाकिम कहे साधु कहो हमको ॥ ८ ॥
ठगावे आत्मा अपनी वो ठग है साधु कपटी है
वमन कर चाटते कुत्ते कहे बाबा कहो हमको ॥ ९ ॥

जो साधु हैं करें साधन लगा कर ध्यान आत्म का
ओ उतरे पार भवसागर से करते पार है हमको ॥ १० ॥
न मागे वो किसी से कुछ न देते है न लेते है
धर्म उपदेश देकर पार वो करदेते है हमको ॥ ११ ॥
परीषह जो पड़ें उन पे खुशी से सहन करते हैं
अगर कोई कष्ट हो उनको बताते हैं ना वो हमको ॥ १२ ॥
करें भोजन वो थोडा सा बनी रहे साधना जिससे
मिले विधी से है जिसके घर कहे दाता है धन्य हमको ॥ १३ ॥
अगर कोई दुष्ट आ करके सतावे बद-दुआ न दे
समझ कर कर्म की माया लगावे ध्यान आत्म को ॥ १४ ॥
हों उनको बहुत सी सिद्धी वो चाहे करदे जो छिन मे
कर्म से जंग करते हैं न कहते ऋद्धि है हमको ॥ १५ ॥
उपजा कर ज्ञान जिनेश्वर हो करे उपदेश जीवो को
करे जयकशन जो उनका ध्यान करेंगे पार वो हमको ॥ १६ ॥

२५

चालः-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
प्रभु कब ऐसा दिन होगा जो सम्यग ज्ञान हो मुझको
आप में आपा आप देखूं वो आवे कब समाँ मुझको ॥ १ ॥
धरूं कब ध्यान मै बन मे बनूं कब मे मुनि भगवन
बनू सम आपके जिनवर बतादो वो समाँ मुझको ॥ २ ॥
कोई वनचर या वेताल आ करे उपसर्ग कुछ कोई

जपूं मैं पाठ सोहङ्ग का न हो कुछ भी पता मुझको ॥ ३ ॥
कोई मारे करे निन्दा चुभोये सून गर तन मे
करे स्तुति गर कोई सभी हो एक नजर मुझको ॥ ४ ॥
रत्न और-कांच कचन धून महल समान सब समझूं
मित्र, शत्रु, दास, राजा सभी हो एक नजर मुझको ॥ ५ ॥
चर्ण के दास जयकशन को जिनेश्वर जी बना दीजे
कर्म का नाश कब होगा हो केवल ज्ञान कब मुझको ॥ ६ ॥

२६

चालः-(सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो त्वर से देखना
कब ऐसा होगा समय जिनेश्वर मुझको मेरा हो ज्ञान जी
दुनिया से नाता तोड दू सब छोड़ मान गुमान जी ॥ १ ॥
धरूं ध्यान वियावान मे होकर ईकल विहारी मुनि
समता हो प्राणी मात्र से कर्मो से ठानू ठान जी ॥ २ ॥
कब कर्म और अपने को समझूं जैसे को तैसा प्रभु
कब कर्म से होकर अलग मैं ध्याऊ अपना ध्यान जी ॥ ३ ॥
कब ध्यान मैं ऐसा धरूं कोई करे कुछ भी यत्न
नही ध्यान मेरा डिगा सके मै ध्याऊं आत्म राम जी ॥ ४ ॥
सिह, सयार, चीते, डास, मच्छर भूत प्रेतादि कुछ करे
हो शान्त चित्त आत्म मग्न अपना लगाऊँ ध्यान जी ॥ ५ ॥
कब दास जयकशन, श्री जिनेश्वर नास कर्मों का करें
कब लोक अन्तिम में बसूं पाकरके केवल ज्ञान जी ॥ ६ ॥

२७

चालः- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
भक्ति करी तो क्या करी अपने को गर जाना नही

योनि मनुष, चेतन, न खो फिर सहज में पाना नहीं ॥ १ ॥
सम्यग बिन छ: खण्ड की माया से तृष्णा ना गई
सन्तोषी तो निर्धन भला क्यों आपा पर जाना नहीं ॥ २ ॥
दान या तप कुछ करे सम्यग बिन बेकार है
वैरागी हो साधु हुआ निज साधना जाना नही ॥ ३ ॥
ससार सारा तज दिया तप जा अधिक वन में किया
पाली दया नही जीव की साधु धर्म जाना नही ॥ ४ ॥
ध्यान अपनी आत्मा का ध्या के कुछ कल्याण कर
जयकशन जिनेश्वरी ज्ञान बिन मुक्त सम्पदा पाना नही ॥ ५ ॥

२८

चाल:- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना
योनि मनूष यों ही गवाई धर्म निज जाना नही
क्रिया करी बेकार सब अपने को गर जाना नही ॥ १ ॥
सम्यग बिन छ: खण्ड की महाराज पदवी ह्वेच है
पाला नही दया धर्म को तो धन का गुण जाना नही ॥ २ ॥
दान भी सम्यग विन बेकार सारे कुदान है
नामी जगत विख्यात हुआ पर सच्चा सुख जाना नही ॥ ३ ॥
परीग्रह भी सारा तज दिया तप जा अधिक वन में किया
जो आपा पर जाना नही तो मोक्ष पद पाना नही ॥ ४ ॥
क्या हुआ उपदेश तेरे से मोक्ष ओर चले गये
नैया के सम स्वयँ पड़ा रहा तो कुछ भी तू जाना नही ॥ ५ ॥

जयकृष्ण ये तन पा अमोलक तू जिनेश्वर ध्यान धर
फिर जा मिले शिव नार से कोई रोकने वाला नही ॥ ६ ॥

२६

चाल:-प्रभु दिखाया है खूब मुझको हटा के मेरी अक्ल का पर्दा

प्रभु को ढूंढा है खूब हमने
परन्तु हमको कही न पाया ॥ १ ॥
जो आपा देखा है आप हमने
तो हमने ईश्वर यही पे पाया ॥ २ ॥
पहाड गगा व मन्दिरो मे
न मस्जिदो मे कही भी पाया ॥ ३ ॥
न शिवद्वारे न थानको मे
न गुरूद्वारे मे हमने पाया ॥ ४ ॥
न गिर्जाघर मे हर पैडियो पर
न नीचे ऊपर कही भी पाया ॥ ५ ॥
जो हमने देखा खुदा को अपने
तो वो खुदा हम खुदी में पाया ॥ ६ ॥
उसी को शिव कहो उसी को अल्ला
रहमान चाहे जो उसको कहलो ॥ ७ ॥
कहो चाहेब्रह्मा या ईश्वर तुम
जो नाम लो सब उसी का पाया ॥ ८ ॥
है ज्ञान दर्शन स्वरूप जिसका

वही जिनेश्वर है सबके अन्दर ॥ ६ ॥

वही तो तू है अय दास जयकशन

यकी ला ढूंढा उसी ने पाया ॥ १० ॥

३०

चालः- मोहनी छबि अय प्रभु जी मुझको भाती आपकी

दुनिया के झगडो से प्राणी मन हटाना चाहिये

हर समय आत्मा का अपनी ध्यान ध्याना चाहिये

मित्र, नारी, मात-पित मतलब के हैं सुत और सुता

छोड़ सबसे वास्ता अपने को पाना चाहिये ॥ २ ॥

था ये सेवक तन हमारा स्वयं हम सेवक हुवे

निज आत्मा साधन का इससे काम लेना चाहिये ॥ ३ ॥

क्या भरोसा जिन्दगी का बुलबुले के समान है

पा मनुष योनि अमोलक यूँ ही खोनी न चाहिये ॥ ४ ॥

जल के होगा ढेर एक दिन तन का रे तेरे सभी

इसकी ममता छोड़ निज कल्याण करना चाहिये ॥ ५ ॥

जाल दुनिया का विकट जयकशन जिनेश्वर ध्यान धर

फौज कर्मो की प्रबल इसको हराना चाहिये ॥ ६ ॥

३१

चालः- प्रभु जी तेरी महिमा अपरम्पार

कर्म रे तेरी महिमा अपरम्पार ॥ टेक ॥

एक बाप के दो हुवे बेटे

घनी कोई निर्धन अपार ॥ १ ॥
श्रेणी एक के दो पढ़े बच्चे
चोर है एक न्यायकार ॥ २ ॥
एक मात के दो हुई बेटी
बाँझ है एक के सुत अपार ॥ ३ ॥
रे कर्मो की अदभुत महिमा
जयकशन न पाता कोई पार ॥ ४ ॥

३२

चाल - अल्बेली सुन्दर कर्म की गति है अपार
करो रे प्राणी साधर्मी जन से रे प्रीत
साधर्मी से प्रीत करो कर सेवा सब सुख पावो
यश पावो ससार में फिर स्वर्ग मे मौज उडावो
चलो रे प्राणी वीर जिनेश्वर की रीत ॥ १ ॥
अवगुण छोड़ के गुण को लेकर गुण की सेवा कीजे
धर्मोपदेश दे पाप छुडा सुकर्म पे सबको कीजे
गावो ना अपना दुनिया भर मे रे गीत ॥ २ ॥
जो साधर्मी दुख मे धर्म से डिगे ना डिगने दीजे
धन सम्पत तन मन साधर्मी जन पे न्यौछावर कीजे
मिलेगा सब कुछ ब्याज समेत अतीत ॥ ३ ॥
सलाका पुरुषो की आफत और नर्क के दुःख बतलाओ
जैसे तैसे होय रे साधर्मी को धीर व धावो

छुडावो सारी मोह माया से रे प्रीत ॥ ४ ॥
वैया व्रत साधर्मी की कर सभी तरह सुख पावो
जयकशन साधर्मी की सेवा करके सुर पुर जावो
बनेगा भैया सारा जग तेरा मीत ॥ ५ ॥

३३

चालः- आराम के थे साथी क्या क्या जब वक्त पडा तो कोई नही
दुनिया है यारों मतलब की बिन मतलब किसी का कोई नही
आराम का साथी सब है जहाँ आफत में किसी का कोई नहीं ॥ १॥
नारी भ्राता जग का नाता कोई अन्त समय काम आवे नही
जब दूत आ यम पकडेंगे तुझे तेरे साथ में जावे कोई नही ॥ २ ॥
सैना प्यादे नौकर चाकर औलाद बनी के यार सभी
जब दोलत पास न तेरे रहे दुनिया मै समझले कोई नही ॥ २ ॥
बिन दौलत ठगिया चौर कहें लुच्चा औ बेईमान कहें
बिन ध्यान जिनेश्वर के जयकशन दुनिया से हो कोई पार नही ॥३॥

३४

चाल.- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
बाँध कर हाथ दों आया रे खाली हाथ जायेगा
न आया साथ कोई तेरे न कोई साथ जायेगा ॥ १ ॥
समझता जिसको अपना है न है तेरा कोई मूर्ख
पिता सुत मित्र नारी क्या सभी से धोखा खायेगा ॥ २ ॥
सभी धन माया मोटर कोठियाँ यहाँ छोड़नी होगी

जो पर उपकार कर देगा वही निज साथ जायेगा ॥ ३ ॥
मनुष तन पाना दुर्लभ है वृथा मत तू गवा इसको
निकल जा जो समय जयकशन न फिर वह हाथ आयेगा ॥ ४ ॥

३५

चाल -मत कॉंटो की सेज पे सोवे तेरा तन छिद जागा
मत जुवे का खेल रचावे तेरा धन नश जागा (टेक)
हार और जीत इसकी दौंनो बुरी है
हार होवे तो चोरी करेगा रे जेल मे फस जागा ॥ १ ॥
जीत मे बोतल दारू चढाकर
मॉस भक्षी हो गणिका मे फस जा गा
पर धन पर ना जी ललचावे
पर दारा है विषधर काला रे बच नही डस जा गा ॥ ३ ॥
झूठ शिरोमणि पापो का राजा
नशे सारे रे बुद्धि बिगाडे न पी ज्ञान नश जा गा ॥ ४ ॥
हिसा, वेश्या से विषधर भला है
डसे एक बार, इनसे रे बार बार नरक में फँस जा गा ॥ ५ ॥
विष से घात विश्वास बुरा है
मत प्राणी के प्राण दुखावे नर्क मे फँस जा गा ॥ ६ ॥
जयकशन मनुष तन पाना रे दुर्लभ
मत यूं ही तू इसको गवॉ काल एक दिन आ ग्रस जा गा ॥ ७ ॥

३६

चालः- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना

४॥ देखे नही जिन ग्रन्थ को हाय जुल्म कैसा हो गया

रोकें धर्म करते हुये पापी जमाना हो गया ॥ १ ॥

आजकल मन्दिरों को अपनी मल्कियत समझन लगे

बन्दी करते ईश्वर को जुल्म भारी हो गया ॥ २ ॥

गर हुई भक्ति किसी को दर्श भगवत के करूँ

जाति उसकी दूसरी है दर्श मुश्किल हो गया ॥ ३ ॥

वाणी खिरी भगवत की सुनने की न थी जबकिसी को रोक

दर्श शूकर कूकरों तक को प्रभु का हो गया ॥ ४ ॥

शास्त्रो में शूद्र क्षुल्लक तक का व्रत पाले कहा

हो गया वह पूज्य जब समयक्त जिसको हो गया ॥ ५ ॥

दास जयकशन समोशरण में जाते सब ही जीव थे

रोका न कोई इन्द्र ने प्रभु दर्श सबको हो गया ॥ ६ ॥

३७

चालः-(सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो त्वर से देखना

५॥ भावना हर वक्त मेरी सब सुखी ये जहान हों

हर समय मैं यह रटूं यह देश स्वर्ग समान हो ॥ १ ॥

शील वन्ता हर बशर हो देश का कल्याण हो

हों कुरीति दूर सब ये देश बहु धनवान हो ॥ २ ॥

ज्ञानी हो हर आत्मा खुद पर को पहचाने सभी

।॥७॥

अज्ञान मिथ्या धर्म का न नाम हो न निशान हो ॥ ३ ॥
चर्चा हर जॉ धर्म की हो धर्म का गुणगान हो
हिंसा चोरी झूठ जुवे का न नाम निशान हो ॥ ४ ॥
छल कपट और रोग भय सब दूर हों ईस देश से
सब सुखी हों देश में दुःख का न नाम निशान हो ॥ ५ ॥
हो न जारी लूट आपस में अधिक विश्वास हो
होंसुखी सब मुल्क और सर सब्ज हो गुलजार हो ॥ ६ ॥
कोई सतावे न किसी को सब में प्रीति प्रेम हो
प्यार मेरा सब से होवे सब ही भाई समान हो ॥ ७ ॥
गुणवान की होवे कदर इल्मो हुनर हो देश मे
इज्जत बुजुर्गो की करे सब सब की ऊंची शान हो ॥ ८ ॥
सब के हों रोजगार बिन औलाद कोई न हो दुःखी
विद्वान हों जयकशन सभी जग मे न कोई दहकान हो ॥ ९ ॥

३८

चाल:- इलाज दर्द दिल हमसे किसी का हो नही सकता
जिया तू ढूंढता फिरता जिसे दरिया पहाड़ो मे
निज आत्म ढूंढ ले अपनी यही है ईश्वर तुझमें ॥ १ ॥
करे जब ध्यान बियाबान या पर्वत पे जा उसका
मिले ईश्वर जभी तुझको जो सच्चा ज्ञान हो तुझमे ॥ २ ॥
प्रभु से मिलना गर चाहे तो वह नही दूर है जयकशन
जो देखे जाने ईश्वर को वही है ईश्वर तुझमें ॥ ३ ॥

३६

चाल:- जमाना रंग बदलता है

समझ मन दुनिया मतलब की

माली कारण फल के सींचे

हरी डाली बैठा पक्षी (टेक) ॥ १ ॥

सूखा पेड़ माली काट गिरायो

उड़ गया पंख फला पक्षी ॥ २ ॥

है मतलब जब तक सब चिपटें

फूंक निकल जाये फुंके झटसी ॥ ३ ॥

पी रस प्यारी जिनवाणी जयकर्शन

काल चला आता भागा झटसी ॥ ४ ॥

४०

चाल:- कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना

मत करो निन्दा किसी की निन्दा करनी छोड़ दो

एक से करनी बुराइ एक की सब छोड़ दो ॥ १ ॥

जिस तरह गुण ग्रहण कुक्कुर का किया श्री कृष्ण ने

इस तरह से गुण को लेकर अवगुणों को छोड़ दो ॥ २ ॥

हँस ज्यों गुण दूध पीता पानी को देता है छोड़

गुणग्रहो श्रीपाल सम बन अवगुणों को छोड़ दो ॥ ३ ॥

मॉस पे कर त्याग मेवा को झपट कव्वा पड़े

हंस सम गुण ग्रहण कर कव्वे की आदत छोड़ दो ॥ ४ ॥

मिल के आपस मे न कीजे गुणियों के हर्गिज विचार
गुणियो के गुण ग्रहण कीजे अवगुणो को छोड दो ॥ ५ ॥
करना यदि तुझको विचार जयकशन जिनेश्वर गुण विचार
कर्म बन्धन से छुटे और सब विचारो को छोड़ दो ॥ ६ ॥

४१

चालः- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी॰प॰
घडी धन्य आज की मुझको हुवे दर्शन दिगम्बर के
हुए थे काल पचंम मे दर्श मुशकिल दिगम्बर के ॥ १ ॥
अनन्ती बार लाख चौरासी मे कर्मो ने भरमाया
उदय शुभ-कर्म ने मुझको दिये दर्शन दिगम्बर के ॥ २ ॥
दिखाया काल चौथे का ये जलवा आपने मुझको
कर्म तो भागते है मिलते ही दर्शन दिगम्बर के ॥ ३ ॥
समय कब ऐसा होगा दास जयकशन आपके सम हो
बनू निग्रंथ कब साधू चलू मार्ग दिगम्बर के ॥ ४ ॥
रहूं एकान्त कब बन मे धरूं कब ध्यान जिनेश्वर का
मैं जीतूं फौज कर्मो की रहू सत्सग दिमम्बर के ॥ ५ ॥

४२

चालः- (बहरे तबील)
प्रभु दास ये अरदास तुमसे करे
अपने चरणो का दास बनालो प्रभु
मैं न हो जाऊं जब तक प्रभु केवली

अपने दर्शन हमेशा कराना प्रभु ॥ १ ॥
स्वामी दूजी ये विनती मेरी आपसे
मुझको आत्म का ज्ञान न हो जब तलक
सदा जिन धर्म में जन्म पाता रहूं
और सदा वाक अपना सुनाना प्रभु ॥ २ ॥
आवे अ त समय जब जिनेश्वर मेरा
राग द्वेष किसी से रहे न जरा
पुत्र मित्र न धन से रहे राग कुछ
ले समाधी जपूं आपको मैं प्रभु ॥ ३ ॥
होवे नाश कव चारित्र मिथ्या मेरा
श्री जिनेश्वर कब निग्र थ साधू बनूं
सब तरफ आपके दर्श होवे मुझे
और हो ध्यान आत्म मे मेरा प्रभु ॥ ४ ॥
अष्ट दुष्ट फिरे चारों और मेरे
इनसे दीजे बचा ली शरण आपकी
दास जयकशन जिनेश्वर करे वीनती
नाश कर्मो का कर मुक्ति दीजे प्रभु ॥ ५ ॥

४३

चाल:-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे
अचम्भा है मुझे स्वामी तुम्हारी ध्यान अवस्था पर
दृष्टि नासिका स्वामी प्रभु धन्य ध्यान तुम्हारे पर ॥ १ ॥

जमाया आसन पदमासन अचल मेरू के सम तिष्ठे
मिठाई खाज पशुओं ने रगड़ कर तन तुम्हारे पर ॥ २ ॥
किसी ने बाँध कर मारा किसी ने कोल्हू मे पेले
तुम्हारी है क्षमा उत्तम न लाये मैल मन जिनवर ॥ ३ ॥
परीषह बाईस को जीता लगा कर ध्यान आत्म का
नम:जयकशन जिनेश्वर जी उतारो पार भवसागर ॥ ४ ॥

४४

चाल·-तुम आप ही आप मे लीन बनो क्यो दु.ख पाव घर घर
जय ध्यान गुरु तुम पूज्य जगत के सब जग तुम गुण गावत है
चरण कमल मे आपके आकर जाति बैर नशावत है ॥ १ ॥
समोशरण मे सब ही क्षमा बल पशु पक्षी तक आवत है
सुर नर भूप इन्द्र आ करके तुमको शीश झुकावत है ॥ २ ॥
करे जो पूजा दर्श तुम्हारे मन बाँछित फल पावत है
आपकी दिव्य ध्वनी सुन करके सब ही कर्म नशावत है ॥ ३ ॥
तृप्त हुआ जयकृष्ण जिनेश्वर आपकी वाणी सुन करके
आप ही का उपदेश प्रभु मुझे मेरा ज्ञान करावत है ॥ ४ ॥

४५

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी च हे
अरे चेतन न कर गफलत ये दुनिया छोड जाना है
फिरे ससार मे क्यो तू तुझे तो मोक्ष जाना है ॥ १ ॥
मनुष्य तन पाना दुर्लभ है वृथा मत तू गवाँ इसको

भगावो क्रोध मद माया समय ऐसा न आना है ।। २ ।।
ये मेरा है ये तेरा है ईसी चक्कर मे भरमाया
जो एक दिन हो गया मुर्दा नही तन फिर ये पाना है ।। ३ ।।
न आवे काम सुत दारा कोई भी प्राण से प्यारा
ये सब झूठा ही झगड़ा है वृथा आँसू वहाना है ।। ४ ।।
कहाँ है भरत से चक्री कहाँ है भीम से योद्धा
गये सब काल के मुख मे हमारा क्या ठिकाना है ।। ५ ।।
उचित था काम जो करना तू भूला आन इस जग में
लडावे लाड जिस तन को नही ये सग जाना है ।। ६ ।।
ले आत्म ध्यान ध्या जयकशन जिनेश्वर पद को पावेगा
सुता-सुत नार धन दौलत सभी कुछ छोड़ जाना है ।। ७ ।।

४६

चाल:- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
औ कर्म अब दुष्ट जालिम भाग जा तू भाग जा
अब तो सही जाती नही है मार जालिम भाग जा ।। १ ।।
वहु अनन्त पुदगल परिवर्तन मैं पूरे कर चुका
लाख चौरासी में तू भ्रमा चुका अब भाग जा ।। २ ।।
अब तो जयकशन शर्ण मे आया हे वीर जिनेश की
चरण पूँजूगा जिनेश्वर के मै जालिम भाग जा ।। ३ ।।

४७

चाल—स्वामी दर्शन काज बुलालो मुझे

स्वामी चरणों का दास बनालो मुझे

चीर द्रोपदी का वढ़ाया था सभा मे इकदिन
अग्नि से नीर किया सीता ने सुमरे जिस दिन
अपने सेवक को भी तो दो दर्शन मुझे ॥ १ ॥

सेठ को हुक्म हुआ शूली का देखो जिस दिन
ले के जल्लाद चले याद किये तुम उस दिन
सूली तोड सिंहासन दिया तुम उसे ॥ २ ॥

चोर अ जन ने तुम्हे याद किया था मन में
सभी सिद्ध विद्या हुई उसको तभी इक छिन में
ध्याता जयकशन सदा है जिनेश्वर तुझे ॥ ३ ॥

४८

चाल-(कव्वाली) सखी सावन बाहर आई झुलाये जिसका जीचाहे

जमाना गौर कर देखा तो सब मतलब का है देखा
न अपना है कोई इसमे सभी को खुद गर्ज देखा ॥ १ ॥
मात पित बन्धु सुत दारा न अपना यार हे कोई
ये काया भी न अपनी है न इसमे सार कुछ देखा ॥ २ ॥
सब जन्तर और मन्तर जर जमी ना आसना कोई
है साता कर्म के साथी असाता मे न कोई देखा ॥ ३ ॥
जन्म से पहले सेवा मे जिनेश्वर की जो रहते थे

उदय जब कर्म का आया न कोई देवता देखा ॥ ४ ॥
जगत जंजाल को तजकर जिनेश्वर ध्यान ध्या जयकशन
हुवे वो पार भवसागर से जिसने आपा पर देखा ॥ ५ ॥

४६

चाल:-भजन करो रे भजन करो हाँ सदा जिनेश्वर भजन करो
मगन रहो रे मगन रहो बस प्रभु भक्ति में मगन रहो
प्रात:ही उठकर कर स्नान रे फिर पूजा में मगन रहो ॥ १ ॥
पूजा करके जाप जपो और निज आत्म में मगन रहो
प्रभु भक्ति से कभी न चूको और दीनों पर मगन रहो ॥ २ ॥
शुभ कर्मो को करो रे जयकशन पाप कर्म से दूर रहो(मगन)

५०

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जीचाहे
समझ के देखले चेतन ये दुनियाँ चंद रोजा है
कही गौना कही रोना ये दुनियाँ चंद रोजा है॥ १ ॥
कहाँ है भीम और रावण कहाँ हनुमन्त खरदूषण
कहाँ है द्रोण और अर्जुन ये दुनियाँ चंद रोजा है ॥ २ ॥
कहाँ लक्ष्मण विभीषण और कहाँ हैं भरत से चक्री
कहाँ बाहुवली प्रहलाद ये दुनियाँ चंद रोजा है ॥ ३ ॥
कहाँ हैं कंस दुर्योधन कहाँ हैं कृष्ण और भीष्म
कहाँ हैं कर्ण से दानी ये दुनियाँ चंद रोजा है ॥ ४ ॥

कहाँ हिटलर व मसलोनी कहाँ सोहराब और रुस्तम
सभी यूं कह गये आखिर ये दुनियाँ चद रोजा है ॥ ५ ॥
अरे जयकशन सभल जल्दी नही आ काल खायेगा
लगा नित ध्यान जिनेश्वर का ये दुनियां चद रोजा है ॥ ६ ॥

५१

चाल - (बहरे तबील)
अब सिवा दर्श के और है ना लगन
प्रभु दर्शन के होने से हो मन मगन
अब न कुछ भी किसी से सरोकार है
प्रभु चरणो में मेरी लगी ह लगन ॥ १ ॥
मैंने भोगे बहुत भोग ससार के
भोग ने रोग हो मेरा कीना पतन
अब न इच्छा रही घूमा हर जाँ पे मैं
प्रभु भक्ति मे मेरी लगी है लगन ॥ २ ॥
मैने पूजे बहुत देवी और देवता
न दिया कुछ किया मेरा सब ने ठगन
अब न पूंजू किसी को कभी भूलकर
सच्चे जिनवर मे जयकशन लगाई लगन ॥ ३ ॥

५२

चाल:-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिस का जी चाहे
छोड़ ससार को मूरख न इसमें फँसना है अच्छा

जो इससे बच् निकल जागा वही रहेगा सदा अच्छा ॥ १ ॥
चौरासी लाख में घूमा बता आराम कहां पाया
कभी जा नर्क में पहुंचा बता संसार क्या अच्छा॥ २ ॥
कभी तिर्यंच पशु बनना पड़े जलचर कभी नभचर
कोई तन छेदे भूखे प्यासे का संसार नही अच्छा ॥ ३ ॥
कभी सुरगत कभी दुरगत कभी एक इन्द्रि तन पावे
कभी तन पर चले आरे नही ससार है अच्छा ॥ ४ ॥
बना मूर्ख फिरे जयकशन पडा तू मोह माया मे
निकल दामन बचाकर के निकल जाना ही है अच्छा ॥ ५ ॥

५३

चाल:- करना जो चाहे करले मरना जरुर होगा
कुछ नेक काम कर चल जाना जरुर होगा
जिन मार्ग को निरखले वर्ना भटकना होगा ॥ १ ॥
सब छोड़ महल अटारी जो वस्तु तुझको प्यारी
धन नारी काया प्यारी सब छोड़ जाना होगा ॥ २ ॥
कहते थे जो जहाँ में सारे है राज हमारा
कुछ संग न ले गये है तन बन की खाक होगा ॥ ३ ॥
ना देखे काल कुछ भी इस वक्त क्या समय है
जयकशन अमर जभी हो जब तू जिनेश होगा ॥ ४ ॥

५४

चाल:- (बहरे तवील)

जो है सच्चा खुदा है न तुझ से जुदा
क्यो तू आपे मे अपने लखाता नही
जो समाता है अपने में पाता वही
और कोई बशर देख पाता नही ।। १ ।।

काहे गगा फिरे काहे यमुना फिरे
काहे मन्दिर व मस्जिद मे ढूँढे उसे
काहे काबे मे उसको फिरे ढू ढता
पास अपने ही क्यो देख पाता नही ।। २ ।।

नाम चाहे जो लो उसके है वो सभी
कहो राम या कहकर पुकारो नबी
चाहे ब्रह्मा कहो प्रभु ईशा मसीह
रागी द्वेषी की दृष्टि वो आता नही ।। ३ ।।

हैं अगर दर्श भगवत के करने तुम्हें
भेद दुई हटा जीव सब एक है
प्राणी मात्र पे जयकशन दया भाव कर
ध्यान कर क्यों जिनेश्वर को पाता नही ।। ४ ।।

५५

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

मुझे मुक्ति में जाना ह प्रभु वाणी सुना दीजे

न भूलूँ मैं कहीं रस्ता सड़क ऐसी वता दीजे ॥ १ ॥
अनादि काल से अब तक नही भगवन मिला मुझको
हैं ज्ञाता आप उस जाँ के दया करके बता दीजे ॥ २ ॥
वहुत से मत किये धारण मैं मार्ग मोक्ष पाने को
वताया सबने था उल्टा प्रभु सीधा वता दीजे ॥ ३ ॥
वताई मोक्ष हिंसा में करी थी मोक्ष पाने को
गिराया नर्क में मुझको दया करनी सिखा दीजे ॥ ४ ॥
कुगुरुओं को गुरु कीना गति तिर्यंच मे घूमा
मिला एक इन्द्रि तन मुझको कपट करना छुड़ा दीजे ॥ ५ ॥
चुगल खोरी करी चोरी किसी के भेद या खोले
मिला फल गूंगा वहरा हो गला तन रोग से छीजे ॥ ६ ॥
पराई नार कुदृष्टि देख आँखों से हुआ अन्धा
कुकर्मो से नपुंसक ऐसे कर्मों से बचा दीजे ॥ ७ ॥
मैं चारो ओर से कर्मों के द्वारा खूब जकड़ा हूं
गहन वन में फिरूं भटका मुझे रास्ता वता दीजे ॥ ८ ॥
ये भवसागर अथाह जलमय पड़ी मंझधार में किश्ती
चरण के दास जयकशन को जिनेश्वर पार लगा दीजे ॥ ६ ॥

५६

चालः- (बहरे तवील)

जो है सच्चा गुरु वह जिनेश्वर है तू
वीर तुम सम नजर कोई आया नहीं
अष्ट कर्मो से पाई विजय आपने

जीत इनसे क्यों मेरी कराते नही ॥ १ ॥
वैंद्य लुकमान धन्वन्त्री बहुत हो गये
इन कर्मो से कोई पार पाया नही
रोग जामन मरण का मिटा दीजिये
ज्ञान औषधि मुझे क्यो पिलाते नही ॥ २ ॥
एक दिन वह था मैं और आप एक थे
अब मुझे अपने सम क्यो वनाते नही
लोक अतिम का रास्ता बता दीजिये
ढूढ जिसको गये, छोड मुझको यही ॥ ३ ॥
न्यायधीश है तुम सम जहाँ में नही
मेरा इसाफ अब तक हुआ क्यो नही
मेरी अर्जी का तुम फैसला दीजिये
डोलें मन एकाग्र क्यो ये होता नही ॥ ४ ॥
मै हूं चेतन निजानन्द चिदानन्द हू मै
कर्म जड है ये क्यों आकर चिपटे मेरे
मेरा इनका गुरुं कौन सा वास्ता
शिव मार्ग मुझे जाने देते नही ॥ ५ ॥
बाँधे खैचे फिरे मुझको ससार मे
कभी तिर्यंच कर कभी सुरगत धरे
कभी दुर्गत मे ले जाकर पटके मुझे
शर्ण जयकशन को जिनवर क्यो देते नही ॥ ६ ॥

५७

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

समझ मन भज श्री जिनवर ये दुनियाँ चंद रोजा हैं
कहीं हसना कही रोना अजब ढग चन्द रोजा है ॥ १ ॥
कही सरसब्ज हो खेती कही दुर्भिक्ष होता हैं
कहीं उद्यान कही श्मशान ये दुनियाँ चन्द रोजा है ॥ २ ॥
कहीं धूप और कही छाया कही वर्षा कही सोखा
कही गर्मी कहीं सर्दी ये दुनियाँ चन्द रोजा है ॥ ३ ॥
कहाँ तात आज्ञा के पालक अधिक भ्रात प्रेम के धारक
कहाँ वह राम, भरत लक्ष्मण ये दुनियाँ चन्द रोजा है ॥ ४ ॥
कहाँ हैं उग्रसैन और कस कहाँ प्रहलाद हिरनाकुश
रहा कोई भक्त ना मानी ये दुनियाँ चन्द रोजा है ॥ ५ ॥
कहां चक्री भरत बाहुबली और द्रोण अर्जुन हैं
कहां हैं भीम दुर्योधन ये दुनियाँ चन्द रोजा है ॥ ६ ॥
कहाँ बुकरात और सुकरात जालीनूस गाँधी हैं
मरे लुक़मान से भी वद्य दुनिया चंद रोजा है ॥ ७ ॥
कहाँ अकबर व औरगंजेब कहाँ दारा सिकन्दर है
रहा कोई नेक न जालिम ये दुनिया चंद रोजा है ॥ ८ ॥
मगन आतम रे हो जयकशन भजा कर नाम जिनेश्वर का
कोई आवे कोई जावे ये दुनिया चंद रोजा है ॥ ९ ॥

५८

चाल - कर्म गति अति गिन्न गिन्न गिन्न गिन्न

सब सुख हो हर छिन छिन छिन छिन

आपा पर लख भिन्न भिन्न भिन्न भिन्न ।। सब ।। १ ।।

पर पदार्थ है जग के सारे

इनसे कर जिया घिन्न घिन्न घिन्न घिन्न ।। सब ।। २ ।।

धर ध्यान निज आत्म ध्याले

जयकशन हो तू जिन्न जिन्न जिन्न जिन्न ।। सब ।। ३ ।।

५६

चाल.- (कव्वाली) सखी सावन वहार आई झुलाये जिसका जीचाहे

करे तू मान काहे पे बता तो रे जिया मानी

नही रहनी सदा तेरी ये काया रूप मद ज्वानी ।। १ ।।

न कर कुछ मान धन बल का न विद्या का करे मूरख

रहे नही हिरनाकुश रावण जरासिन्ध से कोई मानी ।। २ ।।

जरा यादव का कुल देखो थे छप्पन करोड़ बहुनामी

रहा नही नाम का लेवा न कुल का मान कर मानी ।। ३ ।।

थी जिनके धन की नही सीमा निर्धन को धौंस देते थे

ग्रसा जब काल ने आकर न पीने को मिला पानी ।। ४ ।।

गदा और शहशाह कोई बचे नही काल के कर से

मिले सब खाक मे एक दिन ये दुनिया है जिया फानी ।। ५ ।।

सदा तिहू काल तू जयकशन भजा कर नाम जिनेश्वर का

जो जन्मा है मरे एक दिन जा सब कुछ छोड़ यहाँ मानी ॥ ६ ॥

६०

चालः (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना

राज था सब भूम पर और महल थे रत्नो मयी
कांपते थे देवता अब है निशां उनका नही ॥ १ ॥
हाथ में जिनके सुदर्शन चक्र रहता था सदा
खाक में सब मिल गये मिलता निशां उनका नही ॥ २ ॥
राम, रावण, भीम, अर्जुन से बली बहु हो गये
भोज विक्रम भी मरे मिलता निशां उनका नही ॥ ३ ॥
हनूमान लक्ष्मण कृष्ण औरकौरव से योद्धा चल वसे
छोड़ अपनीगये मिसाल अब है निशाँ उनका नही ॥ ४ ॥
मंत्र धारी जादूगर और वैद्य भी सब चल बसे
धन्वन्त्री लुकमान जैसों का निशाँ कुछ भी नहीं ॥ ५ ॥
एक दिन जयकशन सभी के तन की खाक उड़ जायगी
नेकियाँ कर साथ ले चल और जा कुछ भी नही ॥ ६ ॥

६१

चालः- (बहरे तवील)

मान रहता किसीका सदा है नही
जो चढ़ा एक दिन वह पड़ेगा जरूर
कंस रावण जरासिन्ध जगत सेठ से
हिरणाकश जैसों का भी रहा ना गरूर ॥ १ ॥

कौरव पाण्डव व यादव सभी मिट गये
　　जो हुवा पैदा एक दिन मरेगा जरूर
बहुत क्षत्री वहादुर धनी हो गये
　　मौत ने सबका ढीला किया है गरूर ॥ २ ॥
इटली जर्मन व जापान मे मिट गये
　　जिनको ताकत पे अपनी वडा था गरूर
पूरी होती तमन्ना किसी की नही
　　तृष्णा नागन है दु खदाई तज दे गरूर ॥ ३ ॥
जिया फूला फिरे महल ऊचे वना
　　एक समय आवेगा वे गिरेगे जरूर
अष्ट कर्मो ने जकडा है चेतन तुझे
　　शील सयम व तप से मिटा दे गरूर ॥ ४ ॥
निर्मोही का कोई क्या जयकरन करे
　　फौज भागे रे कर्मो की तज कर गरूर
जैसे अपराधी डरता है कौतवाल से
　　कर्म भागे जिनेश्वर के सेवक से दूर ॥ ५ ॥

६२

चाल:- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
हो गये वहु योधा नामी अब पता जिनका नही
　　खाक हो काया उड़ी अब है निशाँ उनका नही ॥ १ ॥
जो करे थे नाम की खातिर हजारो काम थे
　　नाम उनका लेने वाला अब रहा कोई नही ॥ २ ॥

कस रावण हिरनाकुश लुकमान से जग से गये
गाँधी लाला लाजपत जैसे रहे कोई नहीं ॥ ३ ॥
महमूद औरंगजेब और दारा सिकन्दर भी मरे
नैपोलियन मसलोनी और हिटलर रहा कोई नही ॥ ४ ॥
पृथ्वीराज जयचन्द सुभाष बाबू बाल गगाधर तिलक
सब दुनियाँ फानी नेक या जालिम रहा कोई नही ॥ ५ ॥
काम परमार्थ का कर जयकशन जिनेश्वर ध्यान धर
जो हुवा पैदा मरेगा काल बख्शेगा नही ॥ ६ ॥

६३

चाल:-कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
कर्म तूने रंग ये कैसा दिखाया आन कर
अब तो मन मे ठान ली तुझ से लड़ेगें ध्यान धर ॥ १ ॥
ध्यान आत्म का धरे पच इन्द्रियों को वश में कर
मन को अपने वश करे एकाग्र चित्त कर ध्यान धर ॥ २ ॥
पाये बिन जयकशन विजय अब टाला टलने का नही
सब फौज माँरू तेरी तपोबल से जिनेश्वर ध्यान धर ॥ ३ ॥

६४

चाल:- कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
ओ लुटेरों अष्ट कर्मों तुमने लूटा है मुझे
सप्त खोटे हा व्यसन वन मे फँसा लूटा मुझे ॥ १ ॥
मन को मेरे मोह तप धन ज्ञान सब लूटा मेरा

सम्यगरत्न को छीन चहूगत मे फसाया है मुझे ॥ २ ॥
आपा पर पहचान अब जयकशन गया तुझ को समझ
सब जिनेश्वर से कहूं तूने सताया जो मुझे ॥ ३ ॥

६५

चाल:- (सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना
काल अनादि से कर्म क्यो चिपटा सताने को मुझे
लाख चौरासी मे जालिम क्यों फिराया है मुझे ॥ १ ॥
धर्म सब मेरा छुटा पापो मे मुझको फंसा दिया
रत्न सम्यग छीन क्यो मिथ्यात्व मे पटका मुझे ॥ २ ॥
प्यारी सुमति मेरी हटा ठगनी कुमति क्यो सग करी
जाल आलस्य का बिछा जग मे फसाया है मुझे ॥ ३ ॥
माँस मदिरा चोरी वेश्या और खिलवा कर शिकार
रमना पर त्रिया से और जुवा भी खिलवाया मुझे ॥ ४ ॥
नर्क में कभी स्वर्ग मे तिर्यंच भी मुझको किया
योनि मनुष्य भी देके लाखो विपदा मे पटका मुझे ॥ ५ ॥
सुपुत्र दुख या धन का दुख त्रिया कभी खोटी मिली
तन मे कर दिए रोग या तृष्णा से तडफाया मुझे ॥ ६ ॥
हो जा अब होशियार अपनी फौज ला सारी सजा
अज्ञान अदर्शन अंतराय मोहिनी मारू तुझे ॥ ७ ॥
शर्ण ली जयकशन जिनेश्वर की करूँ तुझको विजय
अग्नि तप रूपी मे जालिम मै जला दूँगा तुझे ॥ ८ ॥

६६

चाल:- विचार ली मैं होवे जो लिखा है ललाट

अरी जिनवाणी अम्मां मुझको कर्मों ने मारा री (टेक) ।। अरी

कर्मों ने मुझको मारा माता खिलाया भक्ष अभक्ष

सप्त व्यसन मे रमा के मुझको नर्क मे डारा री ।।अरी०।। १ ।।

कहता मैंने किया कर्म का होये कर्म कभी राजी

ज्यूं ज्यूं कहना किया कर्म का त्यूं त्यूं कष्ट दिया जी ।। अरी०।।२।।

नर्क स्वर्ग तिर्य च गति में पटक वहु दुःख दीना

धर्म कर्म सब मेरा छुड़ा मोहे त्रास बहु विधी दीना ।। अरी०।। ३।।

वे कसूर माँ बच्चा तेरा मात हिमायत ले ले

दुष्मती से बचा कर मुझको मेरा ज्ञान करादे ।। अरी ०।। ४ ।।

कान मेरे में सदा ही रहना सम्यग ज्ञान करादे

अष्ट कर्म माँ वड़े प्रबल है इनसे मुझे छुड़ादे ।। अरी ०।। ५ ।।

शरण मे आया जयकशन तेरी जिनेश्वर इसें बनादे

शिवसुन्दर से माता मेरी जल्दी मुझे मिलादे ।। अरी ०।। ६ ।।

अन्त समय में माता मेरी साथ मेरे तुम रहना

शीश झुकाऊं माता तुझको शिव मार्ग तुम देना ।। अरी०।। ७।।

६७

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन वहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

घड़ी धन्य नेत्र ये मेरे भये दर्शन दिगम्बर के

गया दब दर्शनावर्णी भये दर्शन दिगम्बर के ।। १ ।।

बना पिंजरा ये हाड और मांस का बेकार बिन सम्यग
भयी काया सुफल मेरी दर्श पाकर दिगम्बर के ॥ २ ॥
परीषह जीत ली बाईस प्रभु शिवनाथ स्वामी ने
कर्म सुन काप भागे नाम सुन सच्चे दिगम्बर के ॥ ३ ॥
नशावो कर्म रे भाई दर्श कर शांत मुद्रा के
भगा ये क्रोध मद माया दर्श करलो दिगम्बर के ॥ ४ ॥
कर्म बन्धन से ऐ मुनिवर मुझे मुक्ति दिला दीजे
नमूं पद गुण निधी संयम क्षमासागर दिगम्बर के ॥ ५ ॥
तरसता दास जयकरन था दर्श मुनिवर के पाने को
समय कब आयेगा मेरा मैं व्रत लूं कब दिगम्बर के ॥ ६ ॥

६८

तर्ज.- (बहरे तवील)

प्रभु दर्शन का प्यासा भटकता फिरूँ
दर दे दर्शन ये प्यास बुझा दो मेरी
लाख चौरासी में मैं फिरूं घूमता
दर दे दर्शन ये फेरी मिटा दो मेरी ॥ १ ॥
रोग जामन मरण क्रोध माया अगन
तृष्णा नागन बिमारी मिटा दो मेरी
शुभ मति और संतोष धन दीजिये
[illegible] दया वाणी मीठी बना दो मेरी ॥ ३ ॥
कर्म बैरी ने जकड़ा है जयकरन प्रभु

चहुंगत में फिराया वहु त्रास दे

फूँक दूँ इनको तप रूपी ज्वाला से ?

ऐसी बुद्धि प्रभु जी वना दो मेरी ॥ ३ ॥

६९

चाल:- (वहरे तवील)

चाव दर्शन का मुझको जिनेश्वर तेरे

देके दर्शन ये तृष्णा मिटा दो मेरी

चर्ण सेवक की सुनकर प्रभु वीनती

शिव सुन्दर से प्रीति करा दो मेरी ॥ १ ॥

रोग जामन मरण का लगा है मुझे

कर्म जालिम से बन्धन छुडा दो मेरी

ज्ञाता दृष्टा न तुम सम जहाँ मे कोई

ज्ञान आतम जिनेश्वर जगा दो मेरी ॥ २ ॥

दास जयकशन की अर्दास सुनकर प्रभु

मोक्ष मार्ग मे बुद्धि लगा दो मेरी

पड़ी संसार सागर मे किश्ती प्रभु

वन खिवैया जी पार लगादो मेरी ॥ ३ ॥

७०

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

तुम्हारी शान्त मुद्रा नाथ मन मेरे को भाती है

कर्म के नाश करने की सरल औषधि बताती है ॥ १ ॥
फिरूं था ढूंढता स्वामी विधी मै ध्यान लगाने की
लगाना ध्यान आत्म का ये मूरत खूब सिखाती है ॥ २ ॥
पढी थी ध्यान लगाने की मै विधियाँ बहुत शासन मे
नही आया था पढने से ये मूरत्त जो बतानी है ॥ ३ ॥
किये मैने यत्न सारे मुक्ति का मार्ग पाने को
तुम्हारी मूर्ति मुझको सडक सीधी बताती है ॥ ४ ॥
तडपता था प्रभु जयकशन जिनेश्वर दर्श पाने को
तुम्हारी मूर्ति स्वामी दर्श तुम्हरा कराती है ॥ ५ ॥

७१

चाल:-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिस का जी चाहे
प्रभु वह दिन बता दीजे कि हो वैराग्य कब मुझको
मै समझूं निज को और पर को वह होवे कब समॉ मुझको ॥ १॥
बनूं कब मै मुनि भगवन रहूं इकला कही वन मे
धरूं कब ध्यान मै ऐसाकि अपना ध्यान हो मुझको ॥ २ ॥
लगाऊ ध्यान कब ऐसा समझ पशु काठ का पुतला
मिटावे खाज मेरे से न तन का हो पता मुझको ॥ ३ ॥
समझ पाषण की मूर्ति परिन्द ऊपर मेरे बैठे
वे नोचे फुदके और कुदके न हो कुछ भी पतामुभको ॥ ४ ॥
कोई मारे करे निन्दा चढाये फूल चुभाये शूल
सतावे या करे सेवा सभी हो एक नजर मुझको ॥ ५ ॥

लाभ हानी रत्न और काँच कंचन एक मैं समझूं
दोस्त दुश्मन महल मरघट बराबर हो सभी मुझको ।। ६ ।।
दास जयकृष्ण को स्वामी जरा यह तो बता दीजे
मगन आत्म में मन मेरा हो केवल ज्ञान कब मुझको ।। ७ ।।

७२

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जीचाहे

मान करता तू काहे पै बता तो रे जरा मानी
विनश जा एक दिन तेरी ये काया रूप मद ज्वानी ।। १ ।।
करे क्या मान कुल बल का न विद्या का करे मूरख
सभी थे ठाठ रावण और न यादव के था कोई सानी ।। २ ।।
वड धन्नाड और राजा महाराजा चक्रवर्ती
मिले सब खाक में एक दिन ये दुनिया है जिया फानी ।। ३ ।।
नहीं है कुछ पता आयु का ध्या जयकशन जिनेश्वर को
तू आया है कहाँ से जा कहाँ ये सोच तो प्राणी ।। ४ ।।

७३

चाल:- (बहरे तबील)

ये न जाने है हम चीज क्या है कर्म
पीट सर को करे हाय हाय कर्म
मन वचन काया से जैसी करनी करे
उसी करनी के फल को है कहते कर्म ।। १ ।।
यदि चाहो कभी कष्ट पाये न हम

काम नेकी के कर छोडिये वद कर्म

कर्म अच्छे वुरे स्वयं वनाते जिया

भोगते रे समय काहे पड़ते भ्रम ॥ २ ॥

कोई कहता प्रभु की है टेढी नजर

चैन मिलती न दुःख पाते दिन रात हम

भोगते है सभी अपनी करनी का फल

प्रभु देते सजा ये है झूठा भ्रम॥ ३ ॥

कर्म अच्छे करे जो स्वर्ग सुर वने

काम खोटे करे वो नर्क मे पडे

मिश्र कर्मो से मध्य लोक पाये जन्म

करनी करनी जो छोडे तो जाँ मोक्ष हम ॥ ४ ॥

दास जयकशन सभल सोच कर काम कर

हर समय तू जिनेश्वर के गुण गान कर

कर्म की और अपनी ले पहचान कर

ध्यान आतम लगा काट दे सव कर्म ॥ ५ ॥

७८

चाल:-(कव्वाली) सखी सावन वहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

तम्वाखू वीड़ी हुक्का रोग-खाँसी माँस उपाता है

खिलाता झूठ दुनिया की वहुत रोगो का दाता है ॥ १ ॥

पड़े जो गुड़ तम्वाखू में अनन्ते जीव सड़ें उसमें

जला जीव जिन्दे मुर्दो का घुवाँ मुख द्वारा खाता है ॥ २ ॥

करे गुड गुड़ सड़ा पानी अनन्ते जीव पड़ें उसमें
करे जब हुक्का ताजा गालियाँ दुनिया की खाता है ॥ ३ ॥
चिलम के वास्ते तज लाज फिरे है ढूंढता अग्नि
मिले जहाँ आग पड़े फटकार सारा मान गवाँता है ॥ ४ ॥
जो खाते है तम्बाखू कहते चीसों को मिटाता है
जबाड़े को करे ढ़ीला ये दाँतो को हिलाता है ॥ ५ ॥
करे है खून को पतला बिगाडे आंख की ज्योति
बिगाड़े हाजमा और पेट को मोटा बनाता है ॥ ६ ॥
खड़ा होवे जहाँ बैठे रे पीकों से सड़ाता है
पडे जिन जीवों पर हिसक तू उनके प्राण गंवाता है ॥ ७ ॥
सभी डाक्टर व कहते वैद्य इसमे जहर होता है
न मन को होने देवे थिर अगत काँटे बसाता है ॥ ८ ॥
वचो इससे सदा जयकशन कहा श्री वीर जिनेश्वर ने
अगत को ये बिगाड़े और तम्बाकू तन को खाता है ॥ ९ ॥

७५

चाल:- (बहरे तबील)

मेरी नैया खिवैया जगत के पिता
सिवा आता तुम्हारे नजर ही नहीं
डूबा जाता हूं संसार मझदार में
पार करते हो किश्ती मेरी क्यो नही ॥ १ ॥
चौर अजंन से अपने बराबर किये

ध्यान आत्म से भगवान जो हो गये
आपने उनको जैसा बताया यत्न
वुद्धि मेरी क्यो वैसी वनाते नही ॥ २ ॥
अष्ट कर्मो ने वेडी मे जकडा हूं मैं
मैं हूं चेतन चिदानन्द पुदगल है ये
इनका मेरा तो कुछ भी नही वास्ता
न्यायाधीश क्यो न्याय चुकाते नही ॥ ३ ॥
गुण ग्रही वुद्धि मेरी वनाग्रो प्रभु
कर दू सव का भला भावना रह यही
सभी जीवो से मेरा क्षमा भाव हो
राग द्वेष कभी क्रोध आवे नही ॥ ४ ॥
मैं अनादी से दुनिया मे मारे फिरा
सार इसमे कही भी न पाया प्रभु
कर पार जिनेश्वर जयकरान को दो
सिवा आपके कोई सहारा नही ॥ ५ ॥

७६

चाल:- (वहरे आल्हा)

अनेक तरह के प्राणी जग मे
जिनकी रीति सुनलो भाई
उनको कुछ पहचान करे
ये वात याद हमरे आई ॥ १ ॥

एक तो प्राणी ऐसे जग में

सब जग से मोह छोड़ चुके

जान असार है सब क्षण भंगुर

दुनियाँ से मुंह मोड़ चुके

करे ध्यान वह निज आतम का

शिव नारी से लो लाई ॥ अनेक ० ॥ २ ॥

दूजे प्राणी साधर्मी गुरु जन को शीश झुकाते है

पूजा पाठ करे भक्ति से

नित मन्दिर मे जाते है

दान करे हो हो हुलास

सबका उपकार करे भाई ॥ अनेक ० ॥ ३ ॥

तीजे प्राणी प्रभ दिनों में

कभी मन्दिर मे जाते है

या कोई बूल कबूल करन

तीर्थ यात्रा को जाते हैं

धर्म ध्यान का समय गंवावे

ताश और चौपड मे भाई ॥ अनेक ० ॥ ४ ॥

चौथी तरह के अधर्म धर्म का

नाम न उनको भावे है

गुरु जनों की करे अवज्ञा

दान नाम से ज्वर चढ़े

धर्मी जनों से द्वेष करे हैं

पाप ही पाप करे भाई ॥ अनेक ० ॥ ५ ॥

पाँचवी तरह के महा अधम

माँ वाप को दुष्ट सतावे है

पालन पोषण करने का

वे वदला खूब चुकावें हैं

ऐसे पुत्र से श्वान भला

जो जान की दे वाजी लाई

जिनेश्वर नाम भजा कर जयकशन

ये दुनियाँ अति दुःखदाई ॥ अनेक ० ॥ ६ ॥

७७

चाल:- (वहरे तवील)

हर तरह के है प्राणी जगत मे भरे

रीति उनकी सुनाऊं वे जो जो करे

मेरे जी मे समाई है आज यही

कैसे कैसे हैं प्राणी विचार करे ॥ १ ॥

एक तो ऐसे हैं सव क्षण भगुर समझ

जग जाल सव तोड के त्याग करे

निज आत्म मे अपनी वे रहते मगन

हर समय ध्यान आत्म का अपनी करे ॥ २ ॥

दूजे प्राणी हैं साधर्मी ज्ञानी गुणी

गुरु जन को वे शीश झुकाया करें

पूजा पाठ करे व्रत जाप करे
   नित मन्दिर जी में वे जाया करें ॥ ३ ॥
हो मगन वित समान वे दान करे
   कर दया सभी का उपकार करे
कर्म बेड़ी कटें कब मुनि मैं बनूं
   हर समय मन मे ये ही विचार करे ॥ ४ ॥
तीजे प्राणी प्रभ के दिनों मे कभी
   कभी मन्दिर जी में वे जाया करे
या वोली कबूली को पूरी करन
   कभी तीर्थ दर्श को जाया करे ॥ ५ ॥
दान करते है वे नाम के वास्ते
   पुण्य पाप का थोड़ा विचार करें
धर्म ध्यान समय को विषय मे गवाँ
   ताश चौपड शतरज खेला करे ॥ ६ ॥
चौथे प्राणी अधर्म धर्म जाने नही
   द्वेष कर धर्मी जन को सताया करे
दान नाम से उनको चढ़े है ज्वर
   गुरु जन की अवज्ञा सदा वे करें ॥ ७ ॥
पाँचवे प्राणी अधम से भी हैं महा अधम
   माँ बाप को दुष्ट सताया करें
हाय पाला उन्होंने था किस प्यार से
   आप भूखें रहे सुत का सब कुछ करें ॥ ८ ॥

रोग में लिये-लिये फ़िरे वैद्य पे,
जागे रातो कभी झाड़े झपटे करे,
मल मूत्र में हाय पड़ी मात थी
आप गीले मे पड़ सुत को सूखे करें ॥ ९ ॥
आप नगे रहे उसके तन को ढके,
वहु कष्ट उठा कर पढाया करे,
जुल्म क्या क्या करे पूत के वास्ते
खून कर फाँसी पर चढ जाया करे ॥ १० ॥
चोरी डाके जनी करे सुत के लिये,
जेल खाने पडे कष्ट पाया करें,
विवाह कर सुत के सुख के सब सामाँ किये
बदला उनका वो कैसा चुकाया करे ॥ ११ ॥
कहते मेरा किया क्या है मां बाप ने
आज्ञा ससुराल की वे बजाया करे
ले के त्रिया को हो जाते है वो अलग
पिता माता से झगड़ा मचाया करे ॥ १२ ॥
वहिन भाई पिता माता को कष्ट दे,
और कठोर बोल कैसे वो बोला करें,
कैसे कैसे पिता माता पेट भरे
आप गुर्छल्ले खूब उड़ाया करे ॥ १३ ॥
रोग हो जाये गर कोई मां बाप को
दुष्ट लेने खबर तक न जाया करें

बकते खोटे वचन कहते माँ बाप को
झूठ कहते जरा न लजाया करें ॥ १४ ॥
किन उमीदों से पाला था माँ बाप ने
ये बुढ़ापे में सेवा हमारी करें
दिये कष्ट रूलाये थे सेवा करी
उनकी आहें न धोरे को जाया करे ॥ १५ ॥
ऐसे पुत्र से तो पाले कुक्कुर न क्यों
झूठे टुकड़े पे सेवा तुम्हारी करे
समय आने पै बाजी लगा जान की
हर तरह से है रक्षा तुम्हारी करे ॥ १६ ॥
छटे प्राणी अधम से भी महा नीच है
बहिन बेटी पे खोटी नजर जो करें
कष्ट औरों को देकर खुशी आप हों
विषय भोगों में आनन्द बताया करें ॥ १७ ॥
अच्छी चीजो में खोटी मिला बेचते
पर के धन को हरें ठग्गी चोरी करें
कर के हिंसा में आनन्द है मानते
दुष्ट हिंसा को धर्म बताया करें ॥ १८ ॥
दास जयकशन जिनेश्वर भजा कर सदा
दुनिया फानी सब मतलब की यारी करे
लेश मात्र भी दुनिया में सुख है नही
आपा पर का तू क्यों ना विचार करे ॥ १९ ॥

७८

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

अगर कर्ता जगत ईश्वर तो तू ईश्वर ये बतला दे
दयालू तुझको कहे कैसे जरा तू ही ये बतला दे ॥ १ ॥
रचे दुख सारी दुनिया मे नही सुख क्यों रचा तूने
वनाया एक का एक दुश्मन किया क्यो ऐसा बतलादे ॥ २ ॥
भखे मच्छर व मक्खी को परिन्द परिन्द को भखे बिल्ली
भखे है विल्ली को क्यों श्वान को है श्यार बतला दे ॥ ३ ॥
कोई हिन्दु कोइ मुस्लिम कोई रक्षक कोई भक्षक
बना पण्डित काई व्यसनी लड़ाया क्यो ये बतला दे ॥ ४ ॥
कोई निर्धन कोई धनवान कोई बलवान कोई रोगी
भिखारी और कोई दाता कोई डाकू क्यो बतया दे ॥ ५ ॥
करा कोई इष्ट वियोगी कोई औलाद से दुखिया
अनिष्ट संयोगी कर कोई दिया क्यो कष्ट बतला दे ॥ ६ ॥
रची गर्मी क्यो सर्दी और चौमासादि दुःखदाई
रची बीमारी सोने खाने लघी की क्यो बतलादे ॥ ७ ॥
दिया दुःख सवको जब तू रात्री मे पानी बरसाया
क्या दुनिया को दु.खी तू देख आनन्द माने बतलादे ॥ ८ ॥
अगर सब माया तेरी है और सब ससार रचा तूने
जब कर्ता और कराता तू तो क्यो दण्ड देता बतलादे ॥ ६ ॥
तेरी मर्जी जो जैसी थी तै वैसी ही रची दुनिया

तो फिर पुण्य पाप कोई कैसे करता है तू बतलादे ॥ १० ॥
दिया उपदेश क्यों तूने पडी इसकी जरूरत क्या
इन बातों से कहे कैसे दयालू मुझको बतलादे ॥ ११ ॥
अगर करनी का फल हमको अवश्य भोगना होगा
तो जयकशन जीव करता भरता है स्वयं क्यों न बतलादे ॥ १२ ॥

७६

चाल जोड २ कर भरे खजाने फिर भी तृष्ण बढ़ी रही
हाय २ कर भरे खजाने सारी माया पड़ी रही
पड़े रहे सब महल अटारी भरी तजूरी पडी रही (टेक) ॥ १ ॥
विवाह करन को उछल कूद घोड़े पर बाबू सवार हुवे
फेरे लेकर ही बैठे थे बाबू काल शिकार हुवे
हा हा कार मचा है भारी हाथ में कंगन बंधी रही ॥ २ ॥
कभी है होली कभी दिवाली कभी दशा मरघट जैसी
सब सखियाँ मिल मगल गावें बीबी जी झूलन बैठी
काल का बाण लगा आगे से झूल और पटरी टंगी रही ॥ ३ ॥
महलों ऊपर एक सुन्दर थी गई श्रृंगार बनाने को
उठाई कघी जब थी उसने सिर के बाल बनाने को
बिंदी जड़ी काल की माथे तेल की शीशी धरी रही ॥ ४ ॥
गाड़ी आई पों २ करती सैर करन को सेठ चले
गाड़ी अभी चलेने नही पाई चक्कर खाकर लेट गये
ड्राईवर भी डर से मर गया सड़क पे मोटर खड़ी रही ॥ ५ ॥

सजा मुकुट को शाही ठाठ से राजा थे दरबार गये
सिंहासन पर बैठे ही थे राजा ठंडे ठार हुवे
कूच कर गये नाजर मुंशी मिसल थी सारी पड़ी रही ॥ ६ ॥
जयकशन जिनेश्वर सदा भजा कर आपा पर का ध्यान लगा
दुनिया फानी आनी जानी मतलब की देवे आखिर दगा
पिंजरा खाली उड़ा हंस सब माया काया पड़ी रही ॥ ७ ॥

८०

चालः- (सोहनी) प्रभु खूब बतलाया हमे तेरा ज्ञान अपरम्पार है
एक दिन ये चाँद सा चेहरा तेरा छिप जायेगा
कुनबा कबीला सब तेरा धोखा तुझे दे जायेगा ॥ १ ॥
सब सवारी हाथी घोडे मोटरें रह जायेगी
महल अटारी कोठियाँ सब छोड़कर तू जायेगा ॥ २ ॥
कच्ची कली खिल फूल हो कमलाय करके गिर पडे
ऐसे एक दिन फूल सा चेहरा तेरा मुर्झायेगा ॥ ३ ॥
ज्यों सुबेह सूरज निकल तेजी दिखा ढल हो गरूब
त्यों हुवा पैदा युवा हो बुडा तू मर जायेगा ॥ ४ ॥
जयकशन जिनेश्वर ध्यान धर ये पाये तन कुछ होश कर
सोचा भी है तूंने कभी क्यों आया है कहाँ जायेगा ॥ ५ ॥

८१

(यह भजन लेखक ने अपनी पुत्री को डोले में बैठाते समय नसीहत रूप मे दिया था)

त्राल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

मेरी पुत्री तू सुन प्यारी जगत रीति बताता मै
हमारी आबरू रखियो तुझे नीति बताता मै ॥ १ ॥
जो हो तुझसे बड़ी बेटी सदा इज्जत करो उनकी
तू रखियो मान छोटों का तेरी इज्जत बढे इसमें ॥ २ ॥
शील श्रृंगार तुम रखना सदा चहूं दान भी देना
हूक्म नित सास का पालो धर्म तेरा बताता मै ॥ ३ ॥
करो वह काम हो जिससे सदा तारीफ दुनिया में
सदा कुल रीत पर चलना धर्म नीति बताता मैं ॥ ४ ॥
सुबह उठकर सदा सासू के बेटी तुम चर्ण छूना
वचन मीठा सदा बोलो तेरे हित की बताता मैं ॥ ५ ॥
जो आवे द्वार तेरे पर उसे मायूस मत करना
गरीबों की मदद करना तेरे हित की बताता मैं ॥ ६ ॥
नही चोरी कभी करना निज आत्म ध्यान नित धरना
कुसगत से सदा बचना ये ही तुझको जिताता मै ॥ ७ ॥
पति की आज्ञा में रहना ससुर को देवता समझो
सदा इज्जत करो टालो नही आज्ञा, बताता मैं ॥ ८ ॥
लई तूने प्रतिज्ञा जो उसे मत तोड़ना बेटी

कभी मत धर्म को भूलो यही आदेश देता मै ॥ ९ ॥
पिता जयकशन तेरे का है यही आशीर्वाद बेटी
फलो फूलो सदा जग मे जिनेश्वर से मनाता मै ॥ १० ॥

८२

चाल:- (बहरे तवील)

प्रभु दास बना अरदास करू
अपने चर्णो की शर्ण मे लो दास को
तोड अज्ञान पर्दे को वह ज्ञान दो
मैं खुदी मे खुदी देखलूं आपको ॥ १ ॥
स्वामी दूजा निवेदन है यह आपसे
जब तक मैं न स्वय देखलूं आपको
मै सदा जैन जाति मे पाऊं जन्म
अनुसरता रहूं और सदा आपको ॥ २ ॥
आवे अन्त समय जब जिनेश्वर मेरा
दू सभी को क्षमा लूं करा आपको
पुत्र मित्र ना जग से रहे प्रेम कुछ
मैं लगा कर समाधी रटूं आपको ॥ ३ ॥
प्रभु नाश हो चारित्र मोहनी मेरा
श्री जिनवर मैं निग्रन्थ साधू बनूं
सब तरफ आपके दर्श होवे मुझे
ध्यान आत्म लगा मैं लखूं आपको ॥ ४ ॥

अष्ट दुष्ट फिरे चारों और मेरे

इनसे दीजे बचा ली शर्ण आपकी

दास जयकशन को क्षायक सम्यक्त हो

नाश कर्मो का कर स्वयं जपूं आपको ॥ ५ ॥

८३

चाल:- धन्य जिन वीतराग भगवान

धन्य जिन चौबीसों अवतार (टेक)

आदि अजित सभव भव बन्धन से कर दीजे पार ॥ धन्य ॥

अभिनन्दन श्री सुमति नाथ जी पदम २ सुखकार ॥ १ ॥

श्री सुपार्श्व जिन चन्द्र प्रभु जी पुष्पदन्त जिनराज

शीतल नाथ श्रेयाँस जिनेश्वर करो मेरा उद्धार ॥ २ ॥

वासुपूज्य श्री विमलनाथ जी अनन्त नाथ जग नाथ

धर्म शाँत श्री कुन्थु अरह जी मल्लि मल्लि मोह मार ॥ ३ ॥

मुनिसुव्रत नमि नेमी प्रभु जी पारस नाथ तुम नाथ

पूजूं चर्ण महावीर जिनेश्वर जयकशन को करो पार ॥ ४ ॥

८४

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

अचम्भा है मुझे स्वामी तुम्हारे ध्यान आसन पर

दृष्टि नासिका स्वामी लगाई खूब है जिनवर ॥ १ ॥

जमाया आसन पदमासन अचल मेरू के सम तिष्ठे

मिटाई खाज पशुओ ने रगड़ कर तन तुम्हारे पर ॥ २ ॥

पकड़ बहु त्रास कोई दीना या फाड़ा सिंह ने सीना
मगन आत्म हुवे ऐसे डिगा न ध्यान तुम जिनवर ॥ ३ ॥
परी षह बाईस को जीता लगा कर ध्यान आत्म का
भगाई फौज कर्मों की तपोबल वाण से जिनवर ॥ ४ ॥
छमा उत्तम तुम्हारी पर अधिक चम्भा मुझे आवे
पशु पक्षी सभी तज वैर बैठे एक जगह मिलकर ॥ ५ ॥
हुवा जब ज्ञान केवल तब दिया उपदेश जीवो को
न हो सुख शान्ती क्यो जयकरान जिनेश्वर दर्श को पाकर ॥ ६ ॥

८५

चाल:- (सोहनी) तुम सेवो सच्चे धर्म को जिन धर्म मोक्ष दिलायेगा
कव ऐसा होगा समय प्रभु मुझको भी सम्यग ज्ञान हो
कव मन मेरा ससार से बिल्कुल विरक्तिवान हो ॥ १ ॥
जग माया से ममता हटे धन धूल सब ही समान हो
मेरी भावना कब ऐसी हो सम शहर बियाबान हो ॥ २ ॥
कब रहूं वनो में मै एकला एकान्त गामी बन मुनि
मुझे राग किसी से ना द्वेष हो सब शत्रु मित्र समान हों ॥ ३ ॥
मुझे मार चाहे दे कोई या देवे गाली सैकडो
कव शान्त चित्त ऐसा बनूं मुझको न कोई गुमान हो ॥ ५ ॥
कव ध्यान मै ऐसा धरूं गर तन से पंशु रगडे कमर
मुझको न हो कुछ भी पता मेरा ध्यान आत्म ध्यान हो ॥ ५ ॥
डस जाये या खा जाये कोई न ध्यान आत्म मे हो खबर

कब देखूं आपे में आपको कब मुझको केवल ज्ञान हो ॥
दीजे बता 'जयकृष्ण' को ऐसा समय कब आयेगा
कब अष्ट कर्मों को दलूं कब मुक्ति मेरा स्थान हो ॥ ७ ॥

८६

चालः- जमाना रंग बदलता है
सभी है दुनिया मतलब की
माली कारण फल के सींचे फली लगेगी मतलब की (टेक)
हरी डाली पर बैठा पक्षी गावे राग मल्हार
सूख गया तो काट गिराया लकड़ी चुनी है मतलब की ॥ २ ॥
प्रेम करे जब तक घट में है मेरा कहें सब कोय
फूंक निकल गई फूंकन चाले फला पंख उड गया पक्षी ॥ ३ ॥
है मतलब जब तक तोता है पींजरे मे चहकाय
उड़ गया तोता पींजरा खाली चीज रही ना मतलब की ॥ ४ ॥
फूंक फूंस से तन पिंजर को दीनी राख बनाय
उड़े पवन में फिरे बिखरती अब ये क्या है मतलब की ॥ ५ ॥
भज ले जिनेश्वर नाम तु जयकशन काल रहा मंडराय
ध्यान निज आत्म का धर प्राणी सभी है दुनिया मतलब की ॥ ६ ॥

८७

चाल:-जावो जी जावो झूठी बात के बनाने वाले
ध्याऊं जी स्वामी तुम हो पार के लगाने वाले
नैया तिराने वाले पार लगाने वाले

पाप नशाने वाले धर्म बताने वाले

मरू देवी के लाल मार्ग मुक्ति का बताने वाले ॥ १ ॥

तुम हो निराकार मैंने आपको साकार देखा

सुनी है पुकार बिम्ब आपका आकार देखा

करके जी दर्श तुम्हारे छिकते नही नैन हमारे

दो शिव स्वामी दाता नामी अन्तर्यामी

देवाधि देव स्वय मे स्वयं को प्रभु बताने वाले ॥ २ ॥

आप सा जिनेश्वर देव जग मे न जयकशन देखा

आप ही को कर्म नाश भव-भय का भंजन देखा

जो नाम प्रभु तुम ध्यावे धन सम्पत्त सब सुख पावे

हो कर्म आरी मै ली शर्ण थारी कर्म काटो भारी

काट विकट कर्म जाल प्रभु मुक्ति मे पहु चाने वाले ॥ ३ ॥

८८

चाल:- (सवैया)

कहे पशु पक्षी जलचर नभचर सब

हाथ जोड़ गिड़गिड़ाए अर्ज यू गुजारी है ॥ १ ॥

बाँधा तुमने हमको क्यों दोष हमरा कुछ नाही

काहें को है छीनी हाय आजादी हमारी है ॥ २ ॥

उनकी सुन कुर्बानी को करने वाला कहने लगा

खुशी मान कर कुर्बान स्वर्ग दे सुखकारी है । ३ ॥

काँप गये रोने लगे इतनी सुन दीन पशु

काल कलम टेकी कागज पर फीस जेब मे पड़ी रही ॥ ४ ॥
चेतो चेतो जल्दी चेतो जयकशन अब क्या करना है
जिनेश्वर से लो ज्ञान बाण कर्मों से अब जग लड़ना है
काल का चक्कर फिरे घूमता सारी माया पड़ी रही ॥ ५ ॥

६०

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जीचाहे
जिनेश्वर कर्म से मुझको छुडा दो शर्ण मे आया
मेरा जामन मरण का रोग मिटा दो शर्ण मे आया ॥ १ ॥
अनादि से कर्म के जाल मे जिनवर फसा हूं मै
शर्ण मे आये को दो शर्ण मैं तुम्हरे चर्ण आया ॥ २ ॥
वनाता कर्म हूं मैं आप और मैं आप भोगूं हूं
वनाना कर्म का मुझसे छुडादो शर्ण मे आया ॥ ३ ॥
वनाकर जाल ज्यो मकड़ी फँसे है आप ही उसमें
फसा यूं जाल दुनिया में छुडादो शर्ण में आया ॥ ४ ॥
दयालू दाता तेरे सम जिनेश्वर और नही कोई
चर्ण के दास जयकशन को दो मुक्ति शर्ण मे आया ॥ १ ॥

६१

चाल.-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिस का जी चाहे
मुसाफिर क्यो पड़ा सोता है गाड़ी आने वाली है
चले आयु कर्म इजन अधिक नही टिकने वाली है ॥ १ ॥
ध्यान धर सोच आया कहाँ से कहाँ जाना मुसाफिर है

सफर सामान इकटठा कर टिकट अब कटने वाली है ॥ २ ॥
ये जाती सब जगह गाड़ी टिकट जहाँ का खरीदोगे
उतारेगी वही तुझको सभी जाँ टिकने वाली है ॥ ३ ॥
सभल कर बैठ तू जयकशन धर्म को भूल न जाना
तू ले कुछ ज्ञान जिनेश्वर से ये गाड़ी जाने वाली है ॥ ४ ॥

६२

चाल:- तुम आप मे आप ही लीन बनो क्यों दुख पावो घरघर फिर के
जय जगत गुरू तुम पूज्य जगत के सब प्राणी गुण गावत है
तव ज्ञानोदधि की अय स्वामी गण धर तक थाह नही पावत हैं ॥ १ ॥
आप ही का उपदेश प्रभु आपा पर ज्ञान करावत है
तीन लोक के आकर प्राणी आपको शीश झुकावत है ॥ २ ॥
आप की दिव्य ध्वनि को सुन आनन्द सभी हो जावत हैं
आपके दर्शन पाकर जिनेश्वर कर्म सभी कट जावत हैं ॥ ३ ॥
समय बता दो जिनेश्वर जयकशन का कब कर्म नशावत है
आपके सम कब ध्यान धरूँ ये मेरे मन को भावत है ॥ ४ ॥

६३

चाल:- मोह नीद मे अय चेतन ऐसा क्यों सो रहा है
जिनराज आज मुझको वह मार्ग तुम बतादो
है मोक्ष जाना मुझको सीधी सड़क बतादो ॥ १ ॥
पकड़े फिरे अनादि से कर्म जकड़े २
इनसे मैं छूटूँ कैसे ऐसा यत्न बतादो ॥ २ ॥

लूटा मेरा जिनेश्वर सम्यग्रत्न इन्होने
जयकृशन को ध्यान आतम प्रभु धरना तुम सिखदो ॥ ३ ॥

६४

चालः- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जीचाहे

अगर सुख पाने की इच्छा धर्म अपना समझ लीजे
मै आया हूं कहा से है कहाँ जाना समझ लीजे ॥ १ ॥
लगा कर ध्यान विचारो कर्म क्या हैं और मैं क्या हूं
हटा सब ओर से मन को लगा इस ही पे तुम दीजे ॥ २ ॥
बधे है कर्म कैसे और कटे कैसे विचारो तुम
बैठ एकान्त चित्त निश्चित समय अभ्यास ये कीजे ॥ ३ ॥
पड़े आराम से दृष्टि उसी जाँ ध्यान लगा दीजे
जमा दो दृष्टि को एक ही जगह पर मन स्थिर कीजे ॥ ४ ॥
परन्तु लाल वस्तु पर न दृष्टि को जमा देना
है उत्तम शुक्ल, पीली या हरी नीली समझ लीजे ॥ ५ ॥
करो ये कुछ समय अभ्यास फिर देखो क्या होता है
करो प्रश्न कोई मन से सही उत्तार तुरत लीजे ॥ ६ ॥
जिनेश्वर धर्म और सब धर्म दुनिया के यही कहते
यही कह मिस्मरेजम मन को एक ही जॉ लगा दीने ॥ ७ ॥
विचारो मन स्थिर कर जो अटल वह वैसा ही होगा
यही है नेम जयकशन मंत्र साधन का समझ लीजे ॥ ८ ॥

नोट— यन्त्र जन्त्र मिसमरेजम या ध्यान लगाने का शौक है तो पुसतक के प्रारम्भ में ध्यान लगाने की विधी पढ़िये ।

६५

चालः- सोहनी) कत्ल मत करना मुझे तैगो तवर से देखना

दे चुका बहु कष्ट जालिम दुष्ट कर्म तू भाग जा
अब भई है चेतना तोहे मार दूंगा भाग जा ॥ १ ॥

क्या कहू हैरान हूं तुझको भी अब मैं क्या कहूं
आप ही उलझा हूं मैं तुझको बनाकर भाग जा ॥ २ ॥

बहु अनन्त पुदगल परावर्तन मैं पूरे कर चुका
जाल में फंस करके तेरे अब तो जालिम भाग जा ॥ ३ ॥

साम्यर्थ नहीं है लेखनी में नर्क के दुख लिख सकूं
स्वर्ग में ईर्ष्या से भुनवाया था अब तू भाग जा ॥ ४ ॥

जुआ धरा ऊपर मेरे साँटों से पिटवाया मुझे
भूखा प्यासा और सड़वाया था अब तू भाग जा ॥ ५ ॥

भेड़ बकरा कर कभी छुरियों से कटवाया मुझे
चन्दी कर वधिया कराया अब तू जालिम भाग जा ॥ ६ ॥

मक्खी मच्छर कर कभी परिन्दा बनाया था मुझे
सिंह बन्दर मृग बनाया अब तू जालिम भाग जा ॥ ७ ॥

पृथ्वी पत्थर पहाड़ जल कभी अग्नि फूंस बना दिया
कभी पेड़ चन्दन का बनाया अब तू जालिम भाग जा ॥ ८ ॥

शर्ण मे आया है जयकशन अब जिनेश्वर वीर की
मोक्ष हो जाना मुझे है अब तू जालिम भाग जा ॥ ६ ॥

६६

ाल -करना जो चाहे करले मरना जरूर होगा

पुण्य पाप दोनों ही है ससार मे रूलाते
दोनो को छोड दे जो वो ही है मोक्ष पाते ॥ १ ॥
बेडी बनी है ये दो स्वर्ण और लोहे की है
जैसे हैं कर्म करते वैसी से बांधे जाते ॥ २ ॥
कभी नर्क स्वर्ग मे ये कभी मध्य लोक लाते
कभी कर बबूल मे ये कभी फूल मे बसाते ॥ ३ ॥
भिक्षुक कभी ये दाता तिर्यंच कभी बनाते
रोगी कभी ये राजा चारो गति फिराते ॥ ४ ॥
साबुन लगा के पुण्य का मैल पाप काट जयकशन
दोनों को ध्यान जल से धो क्यो ना मोक्ष जाते ॥ ५ ॥
ले सम्यग ज्ञान जिनेश्वर से अपना ध्यान ध्याले
बीता है काल अनादि जग मे हैं धक्के खाते ॥ ६ ॥

६७

चाल:- चेतन को बहनों कब तक भूली रहोगी

जागो री बहनो कब तक सोती रहोंगी ॥ जागो री १० ॥
काल अनादि बीत गया है समय को खोते-खोते
नर्क स्वर्ग तिर्यंच गति मे खाओगी कब तक गोते

कब तक री बहनों आपे को भूली रहोगी ॥ जागो री ० ॥ १ ॥

उदर मात नौ मॉस दॉत आये अनेक दुख भोगे

गई मदरसे फोड़ा फुंसी चोट शीतला रोगे

चॉटे वचपन के क्या तुम भूली रहोगी ॥ जागो री ० ॥ २ ॥

तरून भई आधीन हुई हुई पत्नी बहु दु.ख भोगे

गर्भ अवस्था समय प्रसूता महा नर्क दु:ख भोगे

जापा जन बहनों रूप शरीर गयो री ॥ जागो री ० ॥ ३ ॥

जीर्ण अवस्था दाँत आँख गई कान से हो गई बहरी

आधीन पुत्र भई मर्ण मनावे काया हो गई बैरी

दुनिया नही अपनी, कब तक भूली रहोगी ॥ जागो री ० ॥ ४ ॥

जिनेश्वर ध्यान लगा इलायची अपने को तू सुमरले

छेदन करके स्त्रीलिंग को कर्मों से युद्ध करले

चलो री बहनो मोक्ष यहॉ कब तक रहोगी ॥ जागो री ० ॥ ५ ॥

६८

चाल:- न त्यागी के लक्ष्मी थिर होती ये त्यागी के पीछे फिरे रोती

है दुनिया यारो पैसे की न निर्धन गुणी जन सज्जन की (टेक)

जिसके पैसा गॉठ में जगत हो रिश्तेवाला ॥ है दुनिया ॥

कहें हैं फूफा ताऊ बहनोई है पापी निर्दयी रिजाला

कहें दयालू ऐब शौंकिया निर्बुद्धि को बुद्धि वाला

है दुनिया यारों पैसे की ॥ १ ॥

बिन पैसे के बाप को भी कहते बुद्धि हीन ॥ है दुनिया ॥

दुष्ट है लुच्चा कहै नेक को निर्दयी पापी साला
बिन पैसे के कौन है देवर सास ससुर घरवाला
है दुनिया यारो पैसे की ॥ २ ॥
जिनेश्वर वाणी भानु खिरी है जाग रे जयकशन जाग॥ है दुनिया०॥
काल अनादि दिया गवा क्यो जगत था देखा भाला
छोड सभी कुछ जाना हो क्या जोड़ करे वन्द ताला
है दुनिया यारो पैसे की ॥ ३ ॥

६६

चाल -चले मिया राम लखन वन को फकीरी कर धारण तन को
धन्य जिन चौवमो अवतार करो भव सिन्धु से जिनवर पार
(दोहा) आदि अजित संभव भव बन्धन से कर दीजे पार
अभिनन्दन श्री सुमति नाथ जी पदम २ सुखकार
पडा है पांव मे सव समार ॥ धन्य ०॥ १ ॥
श्री सुपार्श्व जिन चन्द्र प्रभु जी पुष्पदन्त अघक्षार
शीतल नाथ श्रेयाँस जिनेश्वर करो मेरा उद्धार
उतारो जग सिन्धु से पार ॥ धन्य ० ॥
वासुपूज्य श्री विमल नाथ जी अनन्त नाथ मोहे नाथ
धर्म शान्त श्री कुन्थु अरह जी मल्ली कर्म दो मार
ये नैचे फिरते है ससार ॥ धन्य ॥ ३ ॥
मुनि सुव्रत नमी नेमी जिनेश्वर पार्श्वनाथ कर्म जार
पूजू चरण महावीर जिनेश्वर जयकशन को करो पार
दयासिन्धु हो दयालू अपार ॥ धन्य ॥ ४ ॥

१००

चाल:- (बहरे तबील)

ये है सच्चा खुदा ना किसी से जुदा
ज्ञाता दृष्टा शिव मार्ग बताता सही
शान्त मुद्रा छवि वीतरागी बसर
इसके जैसी तू अपनी बना तो सही ॥ १ ॥
पूर्ण अहिंसक से अहिंसा को ले जानकर
परम दयालू कीमूर्त्ति ये पहचान कर
किस जबाँ से मैं गुणगान करूं वीर के
ध्यान आत्म लगाना सिखाती सही ॥ २ ॥
मोक्ष दाता की जयकशन ले पहचान कर
कर्म भागे जिनेश्वर के गुणगान कर
परम दयालू के चरणो में मस्तक झुका
मोक्ष मार्ग तुझे ये बतावे सही ॥ ३ ॥

१०१

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

तू कर वर्ताव ओरों से कि जैसा अपने सग चाहे
बुरे का फल बुरा होगा भला कर गर भला चाहे ॥ १ ॥
छोड़ सब दुनिया का धंधा तेरा मन हो रहा गंदा
लगा सम्यग रत्न साबुन धुला इसको जो सुख चाहे ॥ २ ॥
अनादि से फँसा मूर्ख फिरे संसार में रुलता

रंगा जिनवाणी से चोला जो इससे छूटना चाहे ।। ३ ।।
रटो नित भावना बारह भगाकर क्रोध मद माया
जन्म जरा मरण की तकलीफ से गर छूटना चाहे ।। ४ ।।
लगा नित ध्यान जिनेश्वर से मग्न आत्म रे हो जयकगन
सभी जीवो से कर समता अगर तू मोक्ष को चाहे ।। ५ ।।

१०२

चाल-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिस का जी चाहे

जाग मोह नीद से चेतन नही कोई भोग अच्छा है
तृष्णा वश धनी से निर्धनी सतोषी अच्छा है ।। १ ।।
चौरासी लाख मे घूमा नही आराम कही पाया
स्वर्गवासी मिथ्याती से सम्यग्यी नारकी अच्छा है ।। २ ।।
स्वर्ग के भोग तुच्छ सुख को पशुगति पड़ के दुःख पावे
जो काटे कान को सोना नही जेवर वो अच्छा है ।। ३ ।।
किसी का भाई बैरी है किसी की नार दु खदाई
दुष्ट सन्तान से प्यारे बिना सन्तान अच्छा है ।। ४ ।।
मिली सब दुनिया की नैमत हुवे बहु रोग काया मे
मना है खाना पीना सब नही मोह जाल अच्छा है ।। ।।
जगत चिन्ता चिता सम रोग जयकशन छोड जग धधा
मिटे जामन मरण का रोग जिनेश्वर योग अच्छा है ।। ६ ।।

१०३

चाल:- (कव्वाली) सखी सावन बाहर आई झुलाये जिसका जीचाहे

मगन आतम मे हो प्राणी अगर तू सच्चा सुख चाहे
भुला दे अपने को खुद मे अगर तू मोक्ष को चाहे ॥ १ ॥
अनादि से अनन्त पुदगल परावर्तन किये पूरे
सभी जाँ घूम फिर आया कहो क्या कहाँ पे सुख पाये ॥ २ ॥
कभी तिर्यंच एक इन्द्रि कभी नरकों के दुःख पाये
कभी स्वर्गो के सुख जामन मरण के बहुत दुःख पाये ॥ ३ ॥
अनादि काल से मोह नीद में चेतन पड़ा है तू
जाग जयकशन जिनेश्वर में लगा लौ मोक्ष जो चाहे ॥ ४ ॥

१०४

चाल:- हासिल है मुझको आज जमाने में सरवरी

वर्ष गया मास गया बीते पल घडी
दुनिया के मोह जाल में फसकर न कल पडी ॥ १ ॥
तू आया क्यों, कहाँ से, कहाँ जाना है तुझे
करता है तू क्या करना है सोचा किसी घड़ी ॥ २ ॥
काल अनादि खो दिया जयकशन तू होश कर
अपना स्वरूप विचारा कर तू आप किसी घड़ी ॥ ३ ॥

१०५

चाल:- (मरसिया) घर चलो भाई मेंहदी लगालो

कब ऐसा समय स्वामी पाऊ अष्ट कर्मों से मैं जीत जाऊ

तेल तिल सम मिले कर्म मुझमे इनसे खुद को मै कैसे छुडाँऊ ॥ १ ॥
पिता पुत्र बहिन-बेटी नारी माया काया न कोई प्यारा प्यारी
पर-पदार्थ को मै अपनाया निर्मोही मैं कब हो जाँऊ ॥ २ ॥
काल अनन्ता अनन्त गँवायो देव, नारकी, और तिर्यंच कहायो
पा मनुष्य जन्म वृथा गवायो कब मुनि हो मै कर्म नशाँऊ ॥ ३ ॥
मैंने स्वामी किया मेरा तेरा सारी दुनिया है रैन वसेरा
निज निजानन्द चिदानन्द हूं चेतन कब आपे में आप समाँऊ ॥ ४ ॥
सुख दुख सब कर्म देन मानूं शत्रु मित्र में भेद न जाँनू
कॉच कंचन मै कब एक मानू निज उत्तम क्षमा-गुण कब पाऊं ॥५॥
आवे अन्त समय जब मेरा सदा तन को समाधि से त्यागूं
जिनवाणी हो कानो में मेरे जब तलक न मैं मोक्ष को पाऊं ॥ ६ ॥
दास जयकशन न कोई है अपना सारी दुनिया है रैन का सपना
कब शुक्ल ध्यान से कर्म जलाकर मैं जिनेश्वर जिनेश्वर हो जाँऊ ॥ ७ ॥